जैन संवाद

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का मुखपत्र

अखिल बंसल द्वारा सम्पादित

अक्टूबर 2011 मूल्य : ₹ 10/-

कार्यकारिणी 2011-13

अध्यक्ष
डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा

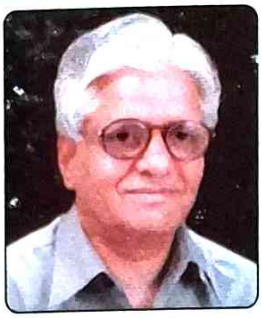

कार्याध्यक्ष
अनूपचंद एडवोकेट

उपाध्यक्ष
डॉ. भागचंद 'भास्कर'

उपाध्यक्ष
डॉ. जयकुमार जैन

उपाध्यक्ष
सुमत कुमार जैन

महामंत्री
अखिल बंसल

मंत्री
डॉ. महेन्द्र 'मनुज'

प्रचार मंत्री
डॉ. ज्योति जैन

संगठन मंत्री
डॉ. राजीव प्रचण्डिया

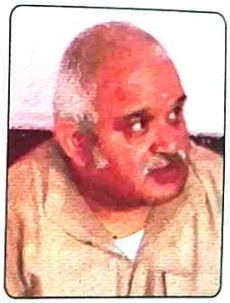

कोषाध्यक्ष
डॉ. सत्यप्रकाश जैन

सदस्यगण

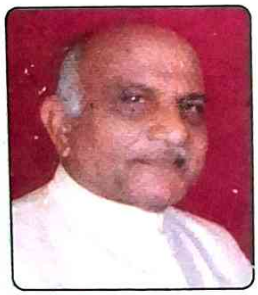

डॉ. शेखरचंद जैन

डॉ. नरेन्द्र 'भारती'

डॉ. फूलचंद 'प्रेमी'

शांतिनाथ होतपेटे

रमेश कासलीवाल

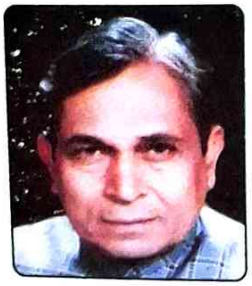

नरेन्द्रकुमार जैन

शैलेष कापड़िया

अकलेश जैन

डॉ. विमला जैन

डॉ. संगीता विनायका

अखिल बंसल
संस्थापक ट्रस्टी

मिलापचंद डंडिया
ट्रस्टी

डॉ. रमेशचन्द जैन
ट्रस्टी

महेन्द्रकुमार पाटनी
ट्रस्टी

डॉ. राजेन्द्र बंसल
ट्रस्टी

जैन-सम्वाद

अंक – प्रथम

प्रधान सम्पादक :

अखिल जैन 'बंसल'

सम्पादक मण्डल :

डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

डॉ. नरेन्द्रकुमार 'भारती', सनावद

अनूपचन्द जैन एडवोकेट, फिरोजाबाद

प्रकाशक :

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ

129, जादोन नगर–बी, दुर्गापुरा, जयपुर–302018

फोन : 0141–2722274, मो. 07737241003

E-mail : wwwjainsampadaksangh.org

अनुक्रमणिका

- सम्वाद क्या है ?/गुलाब कोठारी 3
- जैन पत्र सम्पादक संघ : कल आज और कल/अखिल बंसल 5
- जैन पत्रकारिता : स्वरूप और समीक्षा/चीरंजीलाल बगड़ा 13
- पत्रकारिता व्यवसाय है : व्यापार नहीं/नीरज जैन 16
- जैन पत्रकारिता की दशा और दिशा/पं. रतनचन्द भारिल्ल 18
- जैन पत्रकारिता : स्वरूप और समीक्षा/कपूरचन्द पाट्नी 19
- पत्रकारिता दायित्व एवं मर्यादा/डॉ. शशिकान्त जैन 20
- जैन पत्रकारिता : कतिपय विचार बिन्दु/सुरेश सरल 21
- पत्र प्रशंसा से नहीं, पैसों से प्रकाशित होते हैं/रमेश कासलीवाल 23
- जैन पत्रकारिता की प्रासंगिकता और हम/हुकमचन्द जैन 'मेघ' 25
- पत्र सम्पादक संघ का विधान 29
- आचार्यश्री से रूबरू हुए जैन पत्रकार एवं लेखक 38
- सदस्यों की सूची 41
- सदस्यता फार्म 48

मुद्रक :
प्रिन्टोमैटिक्स
स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा,
जयपुर – 302018
(0141) 2722274, मो. : 09929655786

प्रकाशकीय

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के लिए यह अक्टूबर का माह अति महत्वपूर्ण साबित हुआ है। प्रथम तो संघ की स्थापना 2 अक्टूबर 2006 को हुई थी और यह दिन गांधी–शास्त्री जयन्ती के साथ–साथ विजयादशमी के कारण त्रिवेणी स्वरूप ऐतिहासिक व यादगार रहेगा। 5 वर्ष के छोटे से काल में संस्था ने जो प्रगति की है वह सराहनीय है।

गत वर्ष इन्दौर में हुई कार्यकारिणी की मीटिंग में संस्था की पत्रिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया था.जिसे कार्य रूप में परिणित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। **'जैन सम्वाद'** के नाम से संघ का यह मुख पत्र आपको कैसा लगा अपने विचारों से अवगत करावें।

2 अक्टूबर 2011 को हमने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए पत्र सम्पादक संघ की वेवसाइट तैयार की है। वह वेवसाइट – wwwjainsampadaksangh.org पर क्लिक करके देखी जा सकती है। **'जैन न्यूज ब्यूरो'** के नाम से न्यूज एजेन्सी को भी सक्रिय किया जा रहा है। अब तक जो हमने किया है संभव है आपको हमारी गति धीमी लग रही हो पर जितना भी हुआ है किसी मायने में कम नहीं माना जा सकता। इस अंक में महत्वपूर्ण लेखों के अतिरिक्त संघ का विधान, सदस्यता सूची, सदस्यता फार्म तथा हमारे द्वारा किए गए अब तक के कार्यकलाप प्रकाशित किए जा रहे हैं। आइये समय के साथ आगे बढ़ें और पत्र सम्पादक संघ को सफलता की नई ऊँचाईयों पर ले जाएं।

– अखिल बंसल

सम्वाद क्या है ?

☐ गुलाब कोठारी

आदान–प्रदान या विचार–विमर्श को ही सम्वाद कहते हैं। यह हमारा नित्य कार्य भी है और जीवन का आधार भी। सम्वाद में एक ओर विषय होता है तथा दूसरी ओर सम्प्रेषण का स्वरूप। सम्वाद स्पष्ट, गुप्त या अशिष्ट भी हो सकता है। शान्त या उग्र भी। ये भूमिकाएं परिस्थितियों एवं व्यक्तियों के साथ बदलती रहती हैं। क्योंकि सम्वाद एक अभिव्यक्ति होती है। मन में कोई इच्छा ज्ञान के एक अंश को अन्य तक पहुंचाना चाहती है तब सम्वाद की रूपरेखा तैयार होती है। बिना इच्छा के कोई भी संवाद शुरू नहीं हो सकता। इच्छा का भी अपना स्वरूप होता है। इच्छा क्यों उठी ? इसके पीछे कारण क्या है, भाव क्या है और लक्ष्य क्या है ? सम्वाद इसी पृष्ठभूमि में शुरू होता है। अकारण सम्वाद नहीं होता बल्कि कोई भी कार्य नहीं होता। इच्छा का एक आधार ज्ञान होता है। इच्छा का एक प्रयोजन ज्ञेय का प्रसार है। इसी को तो विज्ञापन कहते हैं। इसका एक लक्ष्य होता है; इस लक्ष्य के पीछे भी एक भाव होता है। यह भाव व्यक्ति विशेष के अनुरूप बदलता जाता है। विषय के साथ ही राग–द्वेष, स्नेह, वात्सल्य, श्रद्धा, दया, करुणा, कठोरता, आदेश, सलाह, प्रार्थना आदि भाव जुड़ जाते हैं। हर भाव के अनुरूप भाषा भी बदल जाती है और हाव–भाव भी। एक विषय को विभिन्न लोगों के समक्ष भिन्न–भिन्न ढ़ंग से रखा जाता है। इसमें उग्र एवं लिंग भेद (स्त्री–पुरुष) के अनुरूप भी भाषा एवं कथानक भिन्न हो जाते हैं। सामाजिक, राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य सीधा विषय पर टिकाए रखता है। वहां बस समष्टि भाव होता है। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का भाव रहता है। धर्म सम्प्रदाय के सम्वाद में अलग ही प्रेरणा छिपी रहती है। यहां आत्मिक से लेकर कट्टरता तक का सम्वाद होता है।

सम्वाद कौन किससे करता है, इस बात को समझना आवश्यक है। इच्छा क्यों और कब उठती है। क्या व्यक्ति इच्छा को पैदा कर सकता है ? बदल सकता है ? आदमी के लिए कुछ संभव है और कुछ संभव नहीं है। शरीर पर कहीं मक्खी या मच्छर बैठ जाए तो एक इच्छा होती है उसे उड़ाने की दूसरी इच्छा होती है उसे मार देने की। उड़ाने के पीछे वर्तमान विवेक हो सकता है किन्तु मारने के पीछे प्रारब्ध भी हो सकता है। दो जीवात्माओं के बीच व्यवहार बहुत कुछ प्रारब्ध पर भी निर्भर करता है। किस पर क्रोध आता है और किस पर प्रेम, यह प्रारब्ध है, वर्तमान नहीं है। वर्तमान का प्रेम तो करना पड़ता है, होता नहीं है। जैसे देवता को तय करके उससे प्रेम करना सीखते जाते हैं। भक्त बनने में समय लगता है। उपासना, तप, ध्यान समर्पण आदि का अभ्यास करना पड़ता है। यह संभव है, किन्तु मात्र दृढ़ संकल्प से। इसी से इच्छा का रूपान्तरण संभव है। यही प्रारब्ध और कर्म के बीच का संघर्ष क्षेत्र है। भविष्य निर्माण का मार्ग है। व्यक्ति अपना भाग्य बनाता है।

इच्छा शरीर में पैदा नहीं होती। बुद्धि में पैदा नहीं होती। संवाद के कारक ये नहीं हैं। सहायक हैं। इच्छा मन में पैदा होती है। मन संवाद का कारण बनता है।

सारी इन्द्रियां भी मन से जुड़ी रहती हैं। हर इन्द्रिय के अपने विषय हैं। व्यक्ति को आकर्षित करते रहते हैं। कुछ आकर्षण–विकर्षण प्रारब्ध के कारण बनता है। इस इच्छा में संवेदना का अंश प्रारब्ध होता है या फिर संकल्प की दृढ़ता। व्यक्ति और विषय के साथ हमारे श्वास–प्रश्वास भी बदलते हैं। इनके प्रकम्पन इच्छा की दशा तय करते हैं। उसके अनुरूप ही हमारा संवाद चलता है।

संवाद के कारक तो व्यक्ति होते हैं। प्राणी भी होते हैं। निर्जीव में संवाद नहीं होता। उनके मन की गति अति अल्प होती है। अब आप सोचें कि संवाद करते समय आपकी भूमिका कैसी रहती है। आप शरीर का उपयोग करते हैं। मुद्राएं, इशारे, हाव–भाव भी भाषा के साथ ही जुड़े होते हैं। आपका ध्यान सामने वाले के शरीर भाषा और हाव–भाव पर ही रहता है। शरीर की भी अपनी भाषा होती है। वही बताती है कि पास बैठा आगंतुक ठीक है या नहीं। टेबल पर या थाली में रखे खाने में आज कौन सी चीज खाने लायक नहीं है। शब्दों का उच्चारण सही है या नहीं। सामने वाला भी स्वयं के शरीर का ठीक वैसा ही उपयोग करता है जैसाकि आप कर रहे हैं। आप अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हैं। उपलब्ध ज्ञान को एक विशेष स्वरूप में ढ़ालते हैं। भाषा, अलंकरण, विशेषण आदि का प्रयोग करें या नहीं करें। विषय सामने वाले की समझ में आएगा या नहीं आएगा। क्या विषय के साथ आपका अहंकार हावी है। क्या अपनी बुद्धिमत्ता की छाप छोड़ना चाहते हैं ? सामने वाले को अनभिज्ञ साबित करना चाहते हैं ? ठीक इसीप्रकार सुनने वाले की बुद्धि भी कार्य करती रहती है। विषय का आकलन भी करती है और आलोचना भी करती जाती है। वह भी स्वयं को आप से अधिक बुद्धिमान समझकर ही सुनता है। बीच–बीच में कुछ टिप्पणी करता रहेगा।

संवाद का केन्द्र होता है मन। दोनों का मन। इच्छा इसी मन की है जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है। पहले बुद्धि इस इच्छा का आकलन करती है उसकी स्वीकृति देती है तब प्राणों का प्रवाह क्रिया शुरू करता है। मन यदि संवाद में जुड़ जाता है तब संवाद सीधा सुनने वाले के मन में बेरोकटोक पहुंच जाता है। बुद्धि भी बीच में बाधा नहीं बनती। शरीर निश्चेष्ट होकर बस सुनता रहेगा। यही पूर्ण मनोयोग है। इसके बिना दोनों के मन में स्मृतियों और कल्पनाओं के विकल्प चलते रहेंगे। संवाद पूरा नहीं होगा। पूर्ण मनोयोग से बोलने वाले को पता रहता है कि कौन–कौन उसे मन से सुन रहे हैं। दोनों के स्पन्दन एकाकार रहते हैं। आप अपने मन, बुद्धि, शरीर का उपयोग कर रहा है। यहां प्रश्न उठता है कि संवाद कौन कर रहा है और किससे ? मां–बाप का निर्मित नाशवान शरीर तो संवाद का माध्यम है। शाश्वत जीव जो शरीर में रहता है वही संवाद करता है। वही संवाद सुनता है। दोनों जीव रूप हैं। इसी के लिए श्रीकृष्ण ने कहा था – ममैवांशो जीवलोके... साधना के उच्च धरातल पर पर बैठा व्यक्ति (साधक, तपस्वी, मनीषीर) जानता है कि दोनों एक ही हैं। अभेद हैं, सुनने वाला भी कृष्ण और बोलने वाला भी कृष्ण। तभी तो वेद वाक्य सत्य ही है – अहं ब्रह्मास्मि।

● प्रधान सम्पादक – राजस्थान पत्रिका

जैन पत्र सम्पादक संघ : कल आज और कल

☐ अखिल बंसल

जैन समाज में विविध क्षेत्रों में अनेक संगठन कार्य करते हैं, परन्तु पत्रकारिता के क्षेत्र में ऐसे रचनात्मक संगठन का अभाव बना हुआ था। मेरे मन में बार–बार ऐसा विचार आता था कि क्यों न जैन पत्रकारों को एक बैनर तले संगठित किया जाए। मैंने अपना यह विचार जब जयपुर के प्रतिष्ठित वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचन्दजी डंडिया को बताया तो उन्होंने मेरा उत्साहवर्धन करते हुए इसप्रकार के संगठन को पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। एक और एक मिलकर दो नहीं अपितु ग्यारह हो जाते हैं इसप्रकार हम दो नहीं अपितु ग्यारह की शक्ति के साथ आगे बढ़े और मेरे आह्वान पर समाज के प्रबुद्धजीवी, जैन पत्रों के सम्पादक, पत्रकार व लेखकों ने संगठन की शक्ति को पहचानते हुए 2 अक्टूबर 2006 को विजयादशमी के पावन पर्व पर मानवीय मूल्यों की स्थापना का विश्वास व जैनत्व के संस्कारों का कीर्ति ध्वज फहराने की लालसा लेकर मीडिया के प्रभावी युग में जैन पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का गठन किया। 1 मार्च 2007 को श्री महावीरजी की पावन पवित्र भूमि पर आचार्यश्री चैत्यसागरजी के मंगल आशीर्वाद एवं मुनिश्री उर्जयन्तसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में जैन पत्रकारों का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन समन्वय वाणी जिनागम शोध संस्थान, जयपुर के आमंत्रण पर सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में देश भर से 31 सम्पादक व पत्रकार सम्मिलित हुए। इस अवसर पर दिशाबोध के सम्पादक डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता ने कहा कि **'भारत भर में जैन समाज सबसे शिक्षित समाज है जिसकी लगभग 400 पत्र–पत्रिकाएं निकलती हैं। इनमें से 193 दिगम्बर जैन पत्र हैं। 2 वर्ष पूर्व सूरत में जैन पत्रकार सम्मेलन हुआ था वहां दिगम्बर पत्रकारों की स्थिति दयनीय बना दी गई थी। आज जैन पत्र सम्पादक संघ की नितान्त आवश्यकता है; यद्यपि प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी के अभिनन्दन के समय कोलकाता में ऐसे ही एक संघ के गठन की शुरूआत हुई थी, परन्तु वह केवल प्रस्ताव के रूप में ही पड़ी रह गई। दिल्ली में भी जैन पत्रकार सम्मेलन की कुछ हलचल हुई थी, किन्तु आगे गति नहीं पकड़ी। विगत वर्ष श्रवणबेलगोला में भी प्रयत्न हुए थे। आपने कहा कि यूं तो पत्रकार अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र हैं पर एक मंच हो जहां वह अपनी बात रख सके इसलिए जैन पत्र सम्पादक संघ का गठन आवश्यक है और समस्त पत्रकारों को इस संगठन से जुड़ना चाहिए।'**

प्रख्यात पत्रकार श्री मिलापचन्द डंडिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि **'पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य हो सच को सामने लाना। पत्रकारिता का उद्देश्य हो सूचना को**

सब जगह पहुंचाना। जैसा हो वैसी रिपोर्टिंग करें। उन्होंने कहा कि आज पत्रों की खेमेबाजी हो रही है। पत्रकार कभी–कभी पत्रिकारिता के धर्म से च्युत हो जाता है। जो लिखकर भेज दिया वही पत्र में प्रकाशित कर देता है, उसका सच पहले जानना चाहिए फिर प्रकाशित करना चाहिए। श्री डंडिया ने कहा कि जैन पत्रकारों के लिए एक आचार संहिता हो, पत्रकारों को एक संसद नियंत्रित करे।'

राजस्थान विश्वविद्यालय में जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजीव भानावत ने कहा कि जैन पत्रकारों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अहम् भूमिका निभाई है। उन्होंने जैन साहित्य, कला, पुरातत्व तथा महिलाओं के उद्धार में भी योगदान दिया है। संघ के गठन के बाद पत्रकारों को रिपोर्टिंग, लेखन, प्रकाशन और प्रेस संचालन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।'वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रवीणचन्दजी छाबड़ा जयपुर ने कहा कि 'पत्रकारों की आचार संहिता हो, बिना किसी भेदभाव के समाचार प्रकाशित किया जाए।' डॉ. भागचन्द जैन 'भागेन्दु दमोह ने कहा कि 'संघ की स्थापना बहुत ही प्रासंगिक है। 'संघे शक्ति कलौ युगे' वर्तमान में संगठन में ही शक्ति है इसलिए संगठन बहुत आवश्यक है। संघ के सहयोग से पत्रकारिता स्थितियों का यथार्थ चित्रण कर सकेगी। जैन पत्रकारिता कहां खड़ी है हमें इसका चिन्तन, मनन, मूल्यांकन करना है।' श्री अनूपचन्द जैन एडवोकेट ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'इस संघ का गठन जरूर होना चाहिए और यदि पत्रकार को कोई पारिवारिक कठिनाई हो, यदि उसका उत्पीड़न किया जाए, उस पर झूठा मुकदमा लगाया जाए तो संघ द्वारा उसकी सहायता की जानी चाहिए।' यह समारोह डॉ. रमेशचन्दजी निवाई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ; उन्होंने नवगठित संघ को 5100 की सहयोग राशि प्रदान की।

सम्मेलन में लिए गए निर्णयानुसार 10 अप्रेल 07 को इसे न्यास रूप में रजिस्टर्ड कराने की कार्यवाही सम्पन्न की गई। न्यास में मेरे अतिरिक्त श्री मिलापचन्द डंडिया, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल, श्री महेन्द्र कुमारजी पाटनी तथा डॉ. रमेशचन्द जैन निवाई स्थायी न्यासी हैं। यह अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ इसी न्यास के अन्तर्गत कार्यरत है। इसके पश्चात् दिनांक 14 से 16 मई 07 को संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में कुण्डलपुर (म.प्र.) में त्रिदिवसीय चिन्तन शिविर का आयोजन किया गया जिसमें देश भर से पधारे 16 वरिष्ठ पत्रकारों ने उपस्थित होकर संगठन को गति प्रदान करने में सार्थक पहल की और जैन गजट के यशस्वी सम्पादक श्री कपूरचन्दजी पाटनी को संगठन का प्रथम अध्यक्ष व मुझे (अखिल बंसल को) महामंत्री बनाकर नए युग का सूत्रपात किया। समाज के वरिष्ठ विद्वान डॉ. रमेशचन्दजी बिजनौर द्वारा नवीन कार्यकारिणी को शपथ दिलाकर विधि सम्मत दायित्व बोध कराया। 15 मई को

पूज्य आचार्यश्री के साथ पहली बार जैन पत्रकारों की वार्ता आयोजित की गई जिसे सभी प्रमुख जैन पत्र–पत्रिकाओं ने विस्तार से प्रकाशित किया। आचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि **'जैन पत्र–पत्रिकाओं को अन्य राजनैतिक पत्र–पत्रिकाओं से अलग होना चाहिए। पत्र का कार्य पत्रिकाओं के माध्यम से नहीं होना चाहिए अर्थात् जहां पत्र समाचारात्मक होते हैं वहीं पत्रिका विचारात्मक होनी चाहिए। पहले गलत जानकारी प्रकाशित करना बाद में भूल सुधार के माध्यम से खण्डन करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। किसी भी समाचार को लोगों से सुनकर नहीं बल्कि तथ्यान्वेषण पूर्वक आश्वस्त होकर प्रकाशित करें। पत्रकारों के ऊपर बहुत बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी होती है जिसका उन्हें सम्यक् निर्वाह करना चाहिए।'** इस अवसर पर आपने पत्रकारों द्वारा पूछे गए लगभग 20 प्रश्नों के सटीक उत्तर प्रदान किए। पूज्य आचार्यश्री के मार्गदर्शन से जैन पत्रकारों को बड़ा संबल मिला और अनेकता में एकता का दिग्दर्शन इस संगठन में देखने को मिला। इस पत्रकार वार्ता में श्री कपूरचन्दजी पाटनी (जैन गजट), डॉ. रमेशचन्द जैन, डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन (पार्श्व ज्योति) डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल, डॉ. प्रेमचन्द रांवका, अखिल बंसल (समन्वय वाणी), श्री नरेन्द्रकुमार जैन (स्वतंत्र जैन चिन्तन) श्री रवीन्द्र मालव (वीर), डॉ. ज्योति जैन (जैन संदेश), डॉ. रतनचन्द जैन, पं. मूलचन्दजी लुहाड़िया (जिनभाषित), प्रा. निहालचन्द जैन (घर–घर चर्चा रहे धर्म की), पं. विराग शास्त्री-(चहकती चेतना), श्री अकलेश जैन (अजमेर आजकल), ब्र. जिनेश मलैया (संस्कार सागर) उपस्थित थे।

मैं अकेला ही चला था जानिवे मंजिल मगर।
लोग आते गए और कारवां बनता गया।।

13 नवम्बर 07 को मथुरा में इस संगठन का द्वितीय सम्मेलन पूज्य उपाध्यायश्री निर्णयसागरजी (वर्तमान में पू. एलाचार्य वसुनन्दिजी) के पावन सान्निध्य में आयोजित किया गया। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि **'पत्रकारों को वैद्य की तरह कल्याणकारी समाचार प्रकाशित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पत्रकार इसप्रकार लिखें कि लोग सोचने को मजबूर हो जाएं। निष्पक्षता से लिखा गया समाचार ही समाज पर प्रभाव डालता है।** आपने कहा कि **विपरीत परिस्थितियों में पत्रकार अपने दायित्व का निर्वाह कर सके तो वह मनीषि है।'** आपका कहना था कि **'झूठी प्रशंसा से संस्कृति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पत्रकारिता समाज को न्याय दिलाने वाली सबसे सशक्त व्यवस्था है।'** जैन गजट के पूर्व सम्पादक प्रा. नरेन्द्रप्रकाशजी, फिरोजाबाद हमारे आग्रह पर वहां पधारे और हमें मार्गदर्शन प्रदान किया।

मथुरा में लगभग 25 सदस्यों की सार्थक उपस्थिति रही। हमारे समाज के पत्रकार व सम्पादक बिना किसी स्वार्थ अथवा आशा के अपनी कलम की ताकत से

समाज को दिशा देने में अग्रसर हैं। हमारे सम्पादकों की सोच के विषय में किसी कवि ने लिखा है –

तुम स्वयं अंधेरे में रहकर, औरों को देते हो प्रकाश।
यों पूरी उम्र बिताकर भी, प्रतिफल की करते नहीं आश।।

25 अप्रेल 08 को संस्था का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन पू. आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली में जैन बोधक की सम्पादिका पद्मश्री सरयू दफ्तरी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जहां सर्वसम्मति से वीर के सम्पादक श्री रवीन्द्र मालव को संगठन का अध्यक्ष बनाया गया। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन के द्वारा पत्रकारों को आगे बढ़ने के लिए मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि **'पत्रकारों को समाज में कलह पैदा करने से बचना चाहिए।'** आपने संस्कार पैदा करने हेतु रुचिकर सामग्री प्रकाशित करने की सलाह दी तथा अपना मूल मंत्र **'मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ'** के सिद्धान्त पर चलने का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर पंजाब केसरी के डायरेक्टर स्वदेशभूषणजी ने कहा कि **'पत्रकारों को पीत पत्रिकारिता से दूर रहकर पोजिटिव तथ्य समाज के समक्ष प्रस्तुत करने चाहिए।'** वीतराग विज्ञान के सम्पादक डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि **'पत्रकारिता समाज का दर्पण ही नहीं अपितु उसे दीपक का कार्य भी करना चाहिए। पत्रकारिता बहुत बड़ी ताकत है। पत्रकारों को कठोर से कठोर बात अत्यन्त विनम्र भाषा में लिखना चाहिए तथा ऐसी सामग्री प्रकाशित करनी चाहिए जिसे बार–बार पढ़ने की इच्छा हो।'** इसके पश्चात् 24 अगस्त 08 को पू. उपाध्यायश्री ज्ञानसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में संगठन का तृतीय राष्ट्रीय सम्मेलन इन्दौर में सम्पन्न हुआ। उपाध्यायश्री ने कहा कि **'बड़ती हुई विसंगतियों के बीच राजनैतिक प्रसंग संगठित व नकारात्मक सोच से समाज में धार्मिक मान्यताएं प्रदूषित हो रही हैं। पत्रकारों को आध्यात्मिक जाग्रति हेतु सकारात्मक सोच बनानी होगी।'** आपने कहा कि **'जैनधर्म अहिंसावादी धर्म है हमें अहिंसा, अनेकान्त व स्याद्वाद जैसी विश्वव्यापी सोच को हमेशा अंगीकार करना चाहिए ताकि हम जीवन में प्रगति के पथ पर बढ़ते रहें और एक दिन श्रेष्ठ श्रावक से श्रेष्ठ श्रमण परम्परा का पालन कर सकें।** इस अवसर पर संघ की नवीन कार्यकारिणी को प्रो. वृषभप्रसाद जैन, लखनऊ द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई।

इरादा हो पक्का औ कर्म का हो बल
तूफान भी झुकेगा, चल पड़ेगा अचल।।

इसी भावना व पक्के इरादे के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। 28 फरवरी 09 को तिजाराजी में सम्वाद–9 के अवसर पर सभी पत्रकारों की बैठक हुई जहां एक

कार्ययोजना बनाई और इसे गति प्रदान करने हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया।

बैठक की कार्यवाही निम्नप्रकार है –

मंगलाचरण के उपरान्त महामंत्री द्वारा संस्था की प्रगति विवरण प्रस्तुत की गई। पश्चात् अध्यक्षजी ने क्रमशः सभी उपस्थित सदस्यों को अपने विचार रखने तथा मंच की नीतियों के परिप्रेक्ष्य में भावी कार्यक्रमों एवं योजनाओं के संबंध में सुझाव प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया। उपस्थित प्रतिनिधियों ने संघ के सदस्यों हेतु आचार संहिता तैयार करने, जैनधर्म गुरुओं में धार्मिक आचार संहिता (मूलगुण के) के प्रति बड़ती उदासीनता के कारण पनपते शिथिलाचार, वैदिकीकरण तथा राग पोषण की समस्याओं के कारण जैन धर्म एवं संस्कृति के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों से निपटने में मीडिया की भूमिका को सशक्त बनाने पर बल दिया। संघ को सक्रिय बनाने की दृष्टि से इसकी कार्ययोजना तैयार करने हेतु पदाधिकारियों में कार्य विभाजन करने, सदस्य पत्र– पत्रिकाओं को वृत्तिक मार्गदर्शन प्रदान करने तथा उन्हें आर्थिक संबल प्रदान करने की दिशा में कार्य करने हेतु विस्तृत ज़ुझाव रखे गए। यह निश्चय किया गया कि संघ के सदस्य पत्र ऐसे कार्यक्रमों के विज्ञापन आदि न छापें जो कि हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुकूल नहीं हैं। साथ ही ऐसे बृहद् आयोजनों के समाचार भी निशुल्क न छापकर विज्ञापन के रूप में ही छापे जाएं जिनके लिए व्यापक स्तर पर बोलियों से या अन्यथा धन संग्रह किया गया हो। बैठक में यह विचार आया कि हमारे सदस्य व्यक्तिगत विरोध व पीत पत्रकारिता से अपने को अलग रखें, किन्तु सैद्धान्तिक एवं नीतिगत आधारों पर प्रखरता से वैचारिक विरोध कर धर्म व संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण के कार्य को अपना परम कर्तव्य मानकर अवश्य करें। यह भी निश्चय किया गया कि संघ अपनी सीमा बांधे और सदस्य पत्र–पत्रिकाओं को वृत्तिक संरक्षण एवं मार्गदर्शन उनके व्यावसायिक हित संरक्षण व संगठन तक ही स्वयं को सीमित रखे। उपलब्ध शोध पत्रिकाओं को विश्व विद्यालयों से शोध पत्रिका के रूप में मान्यता दिलाने, सदस्य पत्र–पत्रिकाओं को शासकीय विज्ञापन प्राप्त करने संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करने, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री में प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता को बनाए रखने, समाज में विकृतियां फैला रहे धर्म गुरुओं व नेताओं पर योग्य अंकुश लगाने, संस्कार निर्माण तथा जैन धर्म की मौलिक बातों के बारे में लोक शिक्षण करने आदि विषयों पर सदस्यों ने व्यापक विचार रखे। अन्त में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए अध्यक्ष रवीन्द्र मालव ने प्रतिनिधियों के प्रश्नों के उत्तर व जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत करते हुए संघ के पदाधिकारियों के मध्य कार्य विभाजन हेतु चार समितियों का गठन करने की घोषणा की।

❑ १० : जैन सम्वाद

25 अप्रेल 09 को संघ का द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन पू. आचार्यश्री धर्मभूषणजी मुनिराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य आचार्यकल्प भारतभूषणजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ। आचार्यकल्प भारतभूषणजी ने वर्तमान समय में पत्रकारों की महती भूमिका की चर्चा करते हुए उन्हें समाज हित में कार्य करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि **'आज बहुत बड़ी शक्ति का उदय हो गया है। इन पत्रकारों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। वे देश व समाज को कहां ले जाना चाहते हैं। आज जैन समाज में विभिन्न मंच हैं जिन्हें संगठित करने का महान कार्य इस सम्पादक संघ के माध्यम से किया जा रहा है। पत्रकार अपनी गंभीरता को रखते हुए दायित्व का निर्वहन करें।** दिगम्बर जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष श्री हुकमचन्द शाहबजाज, इन्दौर, ने कहा कि **'जिस समाज व जाति के पास मीडिया नहीं है वह मृतप्राय है। मीडिया के साथ न होने से ही हम पिछड़े हुए हैं व पहले पायदान से अन्तिम पायदान पर पहुंच गए हैं।'** प्रसिद्ध उद्योगपति तथा दिगम्बर जैन परिषद् के राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी ठोलिया, जयपुर ने कहा कि **'समाज में इस संगठन की आज बहुत आवश्यकता थी।' अखिल बंसल ने इस संघ की स्थापना कर एक महान कार्य किया है। समाज के मतभेद दूर करने में इस संघ का उपयोग किया जा सकता है।** उद्योगपति श्री रमेशजी तिजारिया, जयपुर ने कहा कि **'यह पत्र सम्पादक संघ अति संवेदनशील संस्था है इसने अल्पकाल में ही नई विधाओं को छू लिया है।'**

इस अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन 23 व 24 जनवरी 2010 को महानगर कोलकाता के जैन भवन में वरिष्ठ समाजसेवी श्री मदनलालजी बज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा ने आगत पत्रकारों का स्वागत करते हुए सभी का परिचय कराया एवं आयोजन हेतु प्राप्त आचार्यश्री वर्धमानसागरजी का निम्न आशीर्वाद पढ़कर सुनाया –

'जैन पत्र सम्पादक संघ का 2 दिवसीय विचार सम्मेलन आयोजित है पत्रकार प्रहरी का कार्य कर सकते हैं/करते भी हैं/करना ही चाहिए। समाज, धर्म आदि के क्षेत्र में जागरूकता लाना सर्वोपरि कार्य है अतः सामाजिक शिथिलता को दूर करने में पत्रकारों को कर्तव्य निर्वाह करना चाहिए। वर्तमान समय में अनेकों वाद सामाजिक एकता को विखंडित कर रहे हैं।

पत्रकारिता में निष्पक्षता, प्रामाणिकता एवं सुधार का लक्ष्य तो हो, किन्तु व्यर्थ की निन्दा और पक्ष व्यामोह न हो पक्ष व्यामोह और अश्रद्धा से विखंडना की

ओर कदम बढ़ते हैं। पत्रकार निर्भीक होता है, किन्तु सत्यापन की ओर उसका ध्यान होता है/होना ही चाहिए। स्वार्थपरक मनोवृत्ति से ऊपर उठकर प्रामाणिक वातावरण निर्माण कर सामाजिक प्रोन्नति पत्रकारों का लक्ष्य हो।

जैन संस्कृति जैन संस्कृति बनी रहे अन्य संस्कृतियों का प्रभाव उस पर न पड़े अतः समाज में अपने–अपने पत्रों के माध्यम से वातावरण निर्मित करने पर ध्यान रहे, किन्तु मधुर, अनिन्दक, विनीत एवं जिनागम के परिप्रेक्ष्य में ही यह सब हो ऐसी हमारी मंगल भावना है। इत्यलं।'

इस अवसर पर जैन गजट के यशस्वी सम्पादक श्री कपूरचन्दजी पाटनी ने कहा कि 'भगवान महावीर आज अधिक प्रासंगिक हैं उनके अहिंसा सिद्धान्त आतंकवाद, उग्रवाद से छुटकारा दिला सकते हैं। आज सरकार भी उनके सिद्धान्तों पर बल दे रही है। जो तुम अपने लिए चाहते हो वही दूसरों के लिए चाहो यही जैनधर्म है। जैन समाज आज विभिन्न तबकों में बंट गया है। कोई न कोई किसी संत या पंथ से जुड़ गया है जो चिन्ता का विषय है। नैतिकता नहीं रह गई है। पैसा मुख्य हो रहा है, शिथिलाचार चरम पर है ऐसी विषम परिस्थिति में पत्र– पत्रिकाएं अहम् भूमिका निभा सकतीं हैं। पत्रकारिता, प्रामाणिकता एवं गुणवत्ता युक्त हो, सही पत्रकारिता सोने को सोना और मिट्टी को मिट्टी सिद्ध करे। जैन पत्रकारिता मापदण्डों पर खरी नहीं उतर पा रही है। आज के वातावरण में पत्रकारों का बड़ा दायित्व है।'

पत्र सम्पादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव ने अपने सारगर्भित प्रखर उद्‌बोधन में कहा कि 'हमारे समक्ष दोहरी चुनौती है। विभिन्न क्षेत्रों में आ रही गिरावट को रोकना है साथ ही मौलिक नैतिक मूल्यों पर वापस लौटना भी है।' उन्होंने कहा कि जैनधर्म दर्शन सिद्धान्त एवं सम्प्रदाय और जैनी अलग–अलग हो गए हैं। जैनी अपने सिद्धान्तों एवं दर्शन के अनुरूप न तो अनेकान्ती हैं न स्याद्‌वादी और न अपरिग्रही। अहिंसक भी है। मात्र रसोई तक रह गए हैं। वैचारिक अहिंसकता हमारे अंदर नहीं रही। हमारी कथनी और करनी में फर्क आ गया है। अपना जैनत्व भूलकर हम वैदिकीकरण से ग्रस्त होते जा रहे हैं। हमारे अंदर ओरिजनलटी नहीं रही जहां सच्चाई नहीं वहां खरा सोना नहीं। हम स्थितियों से भटक गए हैं। भक्ति का वैदिकीकरण हो गया है। जैन पत्र सम्पादक संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने तीर्थों की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि तीर्थों पर मंडराते भीतरी एवं बाहरी खतरे तथा सुव्यवस्था पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा ने आगामी दशक का सूत्र वाक्य रखते हुए कहा हमें भक्ति के साथ विवेक का संगम रखना होगा। डॉ.

महेन्द्रकुमार 'मनुज' ने दुनिया के आठवें आश्चर्य कहे जाने वाले अंक चक्रों पर आधारित श्री भूवलय ग्रंथ की आश्चर्यजनक जानकारी दी।

पत्र सम्पादक संघ की औपचारिक अन्तिम बैठक 8 अगस्त 10 को इन्दौर के रवीन्द्र नाट्य गृह प्रांगण में संघ के अध्यक्ष रवीन्द्र मालव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में 21 सदस्यों की उपस्थिति रही। इस बैठक में डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा–कोलकाता, डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन सनावद, रमेश कासलीवाल, महेन्द्र मनुज, अशोक शास्त्री–इन्दौर, डॉ. सुरेन्द्र 'भारती'–बुरहानपुर, श्री अनूपचन्दजी एडवोकेट–फिरोजाबाद, श्री प्रेमचन्दजी बड़जात्या–जयपुर, अकलेश जैन–अजमेर, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल–अमलाई तथा संघ के महामंत्री अखिल बंसल ने अपने–अपने विचार रखे। सभी सदस्यों का सुझाव था कि अर्थ संग्रह हेतु एक समिति का गठन किया जाए। कार्यालय की व्यवस्था स्थाई रूप से की जाए, श्रेष्ठियों द्वारा धन संग्रह किया जाए तथा संगठन को व्यापकता प्रदान की जाए। सभी के सुझाव पर एक अर्थ समिति बनाई गई जिसका संयोजक अनूपचन्दजी एडवोकेट, फिरोजाबाद को बनाया गया तथा उनके सहयोगी के रूप में डॉ. सुरेन्द्र भारती बुरहानपुर तथा डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता को रखा गया। जैन सम्वाद के नाम से संघ के मुख पत्र की निकालने पर सहमति हुई। इसके प्रकाशन हेतु विज्ञापन के माध्यम से अर्थ संग्रह करने का प्रस्ताव रखा। पत्र के सम्पादक मण्डल में श्री अखिल बंसल के अतिरिक्त डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन सनावद, तथा चीरंजीलाल बगड़ा का नाम सबकी सहमति से रखा गया।

संध का तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी में पूज्य आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में 14 से 16 जुलाई 2011 को सम्पन हुआ। अधिवेशन के मध्य प्रा. नरेन्द्रप्रकाशजी जैन की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से दिशाबोध के सम्पादक डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता को संघ का नया अध्यक्ष चुना गया। श्री बगड़ाजी ने अपनी कार्यकारिणी में श्री अनूपचदजी एडवोकेट–फिरोजाबाद को कार्याध्यक्ष, डॉ. भागचन्दजी 'भास्कर'–नागपुर, डॉ. जयकुमार जैन–मुजफ्फरनगर तथा श्री सुमतकुमार जैन–सासनी को उपाध्यक्ष, अखिल बंसल–जयपुर को महामंत्री, डॉ. महेन्द्रकुमार 'मनुज'–इन्दौर को मंत्री, डॉ. सत्यप्रकाश जैन–दिल्ली को कोषाध्यक्ष, डॉ. राजीव प्रचण्डिया–अलीगढ़ को संगठन मंत्री, डॉ. ज्योति जैन–खतौली को प्रचार मंत्री नियुक्त किया। कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों में डॉ. नरेन्द्र 'भारती–सनावद, डॉ. फूलचन्दजी 'प्रेमी'–वाराणसी, डॉ. शेखरचन्द जैन–अहमदाबाद, मिलापचन्द डण्डिया–जयपुर, डॉ. विमला जैन–फिरोजाबाद, श्री शैलेष कापड़िया–सूरत, श्री शान्तिनाथ होतपेटे–हुबली, श्री एन.के. जैन–अजमेर, श्री अकलेश जैन–अजमेर, श्री रमेश कासलीवाल–इन्दौर तथा डॉ. संगीता विनायका–इन्दौर को सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया। यहाँ 24 सदस्यों की उपस्थिति रही। इसप्रकार यह संगठन निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

जैन पत्रकारिता : स्वरूप और समीक्षा

– डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा

कौन है सरस्वती पुत्र :

तितलियों की तरह सरस्वती पुत्रों के अनेक रंग हैं – चिन्तक, पत्रकार, सम्पादक, लेखक, पंडित, प्रतिष्ठाचार्य, विद्वान आदि। चाहे वह समाचार वाहक हो या विचार वाहक, रूपक लिखता हो या वार्ता, बात सीधे ढ़ंग से कहता हो या व्यंग्य शैली में, गद्य में लिखता हो या पद्य में उसे पत्रकार कहिए या 'सम्पादक, लेखक कहिए या कवि, चिन्तक मनीषि मानिए या पंडित है वह एक सफल पत्रकार एक सरस्वती पुत्र। वह घटनाओं को पकड़ता है, सोचता है, समझता है जो देखा समझा है उसे अनेक कसौटियों पर कसता है और उसे शब्दों का जामा पहनाकर पुनः समाज के समक्ष परोस देता है।

भूमिका :

जिसप्रकार प्राण वायु के बिना प्राणी जगत नहीं चलता, वैसे ही सामाजिक जीवन में विचारों का प्रवाह समाज की प्राणवायु है। इसके अभाव में सामाजिक जीवन स्वस्थ नहीं रह पाता। विद्वान, मनीषि, पंडित, पत्रकार इन सबका समाज में स्थान प्राणवायु का है, ऑक्सीजन तुल्य है। विद्वान मंच के माध्यम से, पंडित् शास्त्र की गद्दी से तथा पत्रकार सम्पादक, लेखक अपने लेखन से आम लोगों के दिल और दिमाग दोनों को प्रभावित करता है। इसीलिए तो कलम की ताकत तलवार से अधिक कही गई है।

यदि विद्वान की ऊर्जा सही दिशा में प्रवाहित है तो वह निश्चय ही सामाजिक जीवन को सम्यक् दिशा दिखाने में सक्षम होती है। लेकिन यदि उसकी ऊर्जा सही दिशा में प्रवाहित नहीं है तो वह गजब भी ढ़ा सकती है। समाज के टूटन में भी हाथ बटा सकती है। आज कुछ पत्रकार **'अहो रूपम अहो ध्वनि'** की तर्ज पर मात्र आत्मा की बातें करते हैं तो दूसरी तरफ अधिकांश प्रकाशन पत्र–पत्रिकाएं मात्र श्रद्धापूर्वक नमन करने की वस्तु बनकर रह गए हैं क्योंकि वे समाज के बहकते कदमों को रोकने में सक्षम नहीं है। कुछ लक्ष्मी पुत्रों का अनुगमन कर **'गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास'** बने बैठे हैं, तो कुछ **'अपनी ढपली अपना राग'** की तर्ज पर जैसे भी हो मात्र समाचार परोसने का कार्य करने में व्यस्त हैं। ऐसे परिदृश्य में असली पत्रकारिता की पहचान करना भी एक कठिन कार्य है और यही कारण है कि वर्तमान में पत्र–पत्रिकाओं की बाढ़ आने के बाबजूद समाज में समीचीन असर नदारद है जबकि माना यह जाता था कि तलवार और तोप की समाज को आवश्यकता नहीं है यदि कोई सामाजिक क्रांति लानी है तो मात्र एक अखबार निकालना पर्याप्त है।

जैन पत्रकारिता स्वरूप और समीक्षा :

वर्तमान दिगम्बर जैन समाज में करीब 120 पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं, इनको हम मुख्य रूप से चार वर्गों में विभक्त कर सकते हैं –

1. संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाएं :

(अ) समाचार प्रधान जैसे – जैन गजट, महासमिति पत्रिका, तीर्थ वंदना, जैन संदेश आदि।

(ब) वर्ग विशेष हेतु जैसे – जैन महिलादर्श, खण्डेलवाल हितेक्षु, ऋषभ देशना, तीर्थ श्रुत संरक्षिणी पत्रिका।

2. साधु संघ द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाएं जैसे – पुष्पवार्ता, सम्यक्ज्ञान, अहिंसा महाकुंभ, पुलक जन चेतना आदि।

3. व्यक्ति या समूह विशेष द्वारा प्रकाशित जैन पत्र.–पत्रिकाएं (समाचार प्रधान) जैसे – अहिंसा संदेश, करुणा दीप, वीर निकलंक, पार्षद आदि।

4. शोध अथवा विचार प्रधान पत्र–पत्रिकाएं जैसे – अर्हत् वचन, दिशाबोध, शोधादर्श, तीर्थंकर, समन्वय वाणी आदि।

इसप्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान में समाज में यथेष्ट संख्या में पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है तथा उनकी प्रसार संख्या पांच सौ से 3–4 हजार तक है। कुछ प्रादेशिक भाषा में भी प्रकाशित होती हैं तो कुछ दिगम्बर श्वेताम्बर दोनों समाज से संयुक्त संबंध रखने वाली पत्रिकाएं भी हैं जैसे तीर्थंकर, तीर्थंकर वाणी, शाकाहार क्रांति, जैन भारती आदि।

परन्तु एक बात स्पष्ट है कि कि किसी भी एक पत्रिका से समाज का सही प्रतिबिम्ब दशा और दिशा का परिज्ञान नहीं हो पाता है। प्रायः अधिकांश पत्र सामयिक उद्देश्यात्मक समीक्षा करने से परहेज करते देखे जाते हैं। जबकि सच्ची पत्रकारिता की मांग सदैव यही रहती है कि वह समाज के समक्ष दर्पण की तरह बेलाग, निष्पक्ष पंथ व्यामोह से हटकर घटना की समीक्षा और समाज के चतुर्विध संघ की दशा और दिशा का चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास करे।

दिशा निर्देश :

पत्रकारिता को समाज का चौथा स्तम्भ माना जाता है। अतः उपरोक्त परिस्थितियों में जैन पत्र–पत्रिकाओं से सम्बद्ध सभी पत्रकार सम्पादकों का भी यह नैतिक दायित्व बन जाता है कि वे संस्कृति व जैन दर्शन के संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहायक बनें, श्रमण संस्कृति की गौरव गाथा को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपनी भूमिका एवं जिम्मेदारी को समझें तथा समाज के एक सजग प्रहरी की भूमिका को निष्पक्ष एवं निर्भय होकर अदा करें। इसके लिए कुछ बिन्दुओं को सतत ध्यान रखा जाना आवश्यक है –

० जैनधर्म प्रवृत्ति प्रधान न होकर निवृत्ति मूलक जीवन दर्शन है, वीतरागता इसका संबल है और आत्मोपलब्धि इसका ध्येय है।

० जैनधर्म व्यक्ति प्रधान न होकर गुण प्रधान है। अतः यह धर्म गुणों की पूजा करना सिखाता है, व्यक्ति की नहीं। देवमूढ़ता, गुरु मूढ़ता एवं लोक मूढ़ता सम्यक्त्व के बाधक तत्व हैं। अतः व्यक्तिगत अहम्, यशोलिप्सा एवं महत्वाकांक्षा को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्ति से बचना यथेष्ट है। पत्र–पत्रिकाओं में व्यक्ति के बजाए उद्देश्यपरक समाचार एवं घटनाओं को प्रमुखता देनी चाहिए।

० जैनधर्म स्याद्वाद एवं अनेकान्त सिद्धान्त का पक्षधर है। अतः किसी पूर्वाग्रह हठाग्रह से समाज में विषमता फैलाने वाले एकपक्षीय समाचारों से बचना चाहिए।

० स्वस्थ पत्रकारिता का तकाजा है कि समालोचना व्यक्तिपरक न होकर उद्देश्यपरक हो तथा विचार स्वातत्र्य को बनाए रखते हुए मतभेद को मनभेद न बनने दें। नए विचारों के लिए दरवाजे सदैव खुले रखें। विपक्ष की बात को गंभीरता से सुनने का संयम बरतें। भाषा मर्यादित एवं आगमानुकूल रखें। अपने पाठकों को विचार समाचार परोसें उन पर थोपें नहीं।

० पत्रकारिता पीत, भीत, मीत या क्रीत पत्रकारिता न हो।

इसप्रकार यदि सभी पत्रकार अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं तो सचमुच एक बहुत बड़ी ताकत बनकर समाज में अनेक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न कराने/प्रेरणा देने तथा अपनी महनीय भूमिका निभा सकने में सक्षम हो सकते हैं। आज हमारा समाज किन विकृतियों की गिरफ्त में हैं, जीवन शैली में किसप्रकार अहिंसा से दूरी बढ़ती जा रही है, समाज के प्रांगण में करुणा, दया, अहिंसा, नैतिकता, शाकाहार, सौहार्द आदि की फसल क्यों नहीं उग पा रही है ? समाज में धर्म प्रभावना के नाम पर उत्सव प्रियता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर फूहड़पन किस कदर तेजी से फैल रहे हैं। जैन सांस्कृतिक आध्यात्मिक मूल्यों के क्षरण के इन क्षणों में सम्पादक पत्रकारों की महनीय भूमिका है, गहन उत्तरदायित्व है। पत्रकार की हर धड़कन में जीवन विज्ञान को परोसने की अद्‌भुत क्षमता होती है अतः झुलसती मानवता को बचाने एवं समाज का जीर्णोद्धार करने हेतु ज्वलंत समस्याओं की अनदेखी न करना ही उनका परम कर्तव्य है।

● सम्पादक – दिशाबोध (मा.)

46, स्ट्राण्ड रोड़, तीसरा तला, कोलकाता–700007

खीचों न कमान न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।।

– अकबर इलाहाबादी

पत्रकारिता व्यवसाय है, व्यापार नहीं

❐ नीरज जैन

बीसवीं शताब्दि के प्रारंभ में परतंत्र भारत में स्वतंत्र पत्रकारिता का जन्म आत्म बलिदान का साहस रखने वाले महापुरुषों के द्वारा हुआ था। यानि यह कमाई का साधन नहीं सर्वस्व त्याग का मार्ग था। घर फूंके आपनो, चलै हमारे संग। इसीलिए सर्वश्री गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, महामना मालवीय, महात्मा गांधी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे चुनिंदा आत्म बलिदानी और साहसी महापुरुष ही उस भवन की नींव के पत्थर बन पाए।

स्टूडियो में अपना फोटो बनवाने पर यदि हमें उसमें कोई विद्रूपता दिखाई दे तो हम फोटोग्राफर से शिकायत कर सकते हैं, फोटो के दोष निकलवाकर या दूसरा फोटो बनवाकर संतुष्टि भी प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु यदि उसी केमरामैन द्वारा लिए गए एक्सरे ग्राफ में टीवी के धब्बे या कैंसर की गांठें दिखाई दें तो हम केमरामैन को दोष देकर, ब्रश फेरकर गांठें हटवाकर निरोग तो नहीं हो सकते। एक दूसरा सपाट या नियोजित एक्सरे निकलवाकर निश्चिन्त हो जाना भी समझदारी नहीं होगी। वह घातक बीमारी हमारे भीतर है और हमें उससे मुक्त होना ही है, ऐसा सोचकर जो लोग संकल्पपूर्वक उस दुष्ट कुष्ट के प्रतिकार में जुट जाते हैं वही उससे उबर पाते हैं।

पत्रकार का धर्म भी केमरामैन के धर्म जैसा ही है। समाज को आईना दिखाते चलना उसका कर्तव्य है जो उसे हमेशाा हिम्मत और ईमानदारी से स्पष्टता के साथ करना चाहिए। वह समाज की अच्छाईयों और उपलब्धियों को सतरंगा बनाकर समाज के सामने प्रस्तुत करे यह तो ठीक है परन्तु पत्रकार को जब और जहां आवश्यक लगे तब और तहां उसे एक्सरे लैंस का प्रयोग करके समाज में व्याप्त रूढ़ियों, मूढ़ताओं और उसके भीतर की सड़ांध को भी उजागर करने का ईमानदार प्रयत्न करते चलना चाहिए। ऐसा किए बिना वह अच्छा व्यापारी तो कहला सकता है, परन्तु पत्रकारिता के पवित्र व्यवसाय की पत रखने वाला ईमानदार और सार्थक पत्रकार नहीं कहला सकता।

समय बदल गया है। परिस्थितियां बदल गई हैं और कुछ अलग प्रकार की समस्याएं हैं जो पत्रकारिता के मार्ग में कांटे बिछाकर पत्रकार की यात्रा को दुगम बनाती चलती हैं। राजनीति के खग्रसी ग्रहण ने भी इस लोकोपकारी यज्ञ की आत्मा को स्पंदनहीन करने में अपना चमत्कार दिखाया है। मीडिया की नव विकसित विस्मयकारी तकनीकों की ओर से मानव के मन मस्तिष्क और उसके श्रम की सार्थकता को रोज़ नई चुनौतियां मिल रही हैं। आज इस व्यवसाय में आई उन विसंगतियों को पहचानकर उनका उन्मूलन करने की चिन्ता या वैसा कौशल किसी

के पास नहीं है। वह पत्रकार का धर्म है किन्तु अर्थतंत्र की दासता स्वीकार करके कौन सा धर्म सुरक्षित रह सकता है ? आज जैन पत्रकारिता के साथ भी लगभग वही हो रहा है।

पत्रकार को अपनी कुशलता के लिए एक बात ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है। यह जगत की रीति है कि कुरूप व्यक्ति को आईना दिखाएं तो वह अपनी कुरूपता पर शर्मिन्दा होने के बजाए दर्पण को ही तोड़ने के लिए झपटता है। पत्रकार के साथ भी ऐसा ही होता है कि सामने वाला एक्सरे में दिखने वाली अपनी आंतरिक विद्रूपता में सम्पादक, लेखक या टिप्पणीकार का ही दोष देखता है, उसे अपना विरोधी मान बैठता है। फिर अपने असली रूप में प्रगट होकर उसकी निन्दा में जुट जाता है या उसके हाथ–पैर तोड़ने तुड़वाने पर आमादा हो जाता है। वह हिंसा के माध्यम से ही क्यों न हो आपको अहिंसा का पाठ पढ़ा देना अपना पुनीत कर्तव्यमान बैठता है।

जैन समाज में ऐसा हुआ है और हो रहा है। जैन संदेश के सम्पादक डॉ. कन्छेदीलाल और तीर्थंकर के सम्पादक डॉ.नेमीचन्द जैन के ताजा उदाहरण हमारे सामने हैं। इसलिए मेरा परामर्श है कि जैन पत्र के सम्पादकों को वर्तमान परिस्थितियों में ठकुर सुहाती पद्यति से ही अपना काम चलाते चलना चाहिए या फिर यथार्थ पत्रकारिता के लिए संकल्पित होने के पूर्व उसके इस सम्भावित परिणाम पर गंभीरता से विचार करके ही कोई व्रत लेना चाहिए। यह विश्वस्त और उपयोगी परामर्श है क्योंकि अनुभवी और भुक्तभोगी की कलम से ही लिखा जा रहा है।

यह देखकर अचरज होता है कि इस सबके बाबजूद कुछ पत्र हैं जो खरा और कडुवा सच समाज के सामने रखने की हिम्मत कर रहे हैं। डॉ. नेमीचन्द के जाने से उस प्रकार की कोशिश करने वाली शक्ति का एक आधार तो सरक गया है। प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी अपनी लेखनी में पैनापन ला रहे थे, परन्तु सुबह–शाम जुदे–जुदे मुखौटे धारण करने के आदी प्रायोजकों को वह कैसे सहन हो सकता था। प्रो. लीलावती पत्रकारिता के संयम और संतुलन का अतिक्रमण कर जाती हैं इसलिए उनका प्रभाव बनकर नहीं रह पाया। रमेश कासलीवाल काफी निर्भीकता से कलम चला रहे हैं सूझबूझ और बेलौस कथन दोनों का मेल वीर निकलंक के पन्नों पर देखने को मिला है। कई बार उनके साहस की प्रशंसा करने का मन होता है, परन्तु उन्हीं की कुशल कामना बीच में बाधक बनकर खड़ी हो जाती है।

समन्वय वाणी ने जबसे अपने सीमित दायरे से बाहर निकलने का प्रयत्न किया है तबसे उसने हम जैसे पाठकों को भी आकर्षित किया है। कई बार इसने समाज को कटु सत्य से अवगत कराकर तथाकथित संतों महंतों को भी आईना

दिखाने का काम किया है। हमने हर बार ऐसे प्रयत्नों की सराहना की है या करने का मन बनाया है। इस सरोकार को तुम (अखिल बंसल) बढ़ा सकोगे ऐसी आशा है। इस सौगंध को निभाने के लिए निर्भीकता के साथ निष्पक्षता की आवश्यकता होती है वह तुम्हारे भीतर है, उसका उपयोग करते रहोगे तो प्रकाश की कुछ नई किरणें फूटेंगी इसमें हमें कोई संदेह नहीं है। आज सारा वायुमंडल परिग्रह लुब्धता की सडांध से प्रदूषित हो रहा है और लगता है कि सारे कुंओं में भांग पड़ गई है। ऐसे प्रदूषित वातावरण में किसी भी व्यवसाय को निर्दोष बनाए रखना लगभग असंभव हो जाता है तब पत्रकारिता की गुणवत्ता को कैसे बचाया जाए यह महत्वपूर्ण और अहम सवाल है। ऐसी अनीतिपूर्ण और न्याय विहीन परिस्थितियों में अपने आपको ऐसा पत्रकार बनाए रखने की कोशिश दुससाहस से कम नहीं है। जो गिने चुने दुस्साहसी इसके प्रति आशावान हैं और ऐसे प्रयासों में लगे हैं वे प्रशंसा के पात्र हैं उनके लिए सदा हमारी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

● शान्ति सदन, सतना (म.प्र.)

जैन पत्रकारिता की दशा और दिशा

❑ पं. रतनचन्द भारिल्ल

वर्तमान में जैन पत्रकारिता की दशा तो दयनीय है ही दिशा से भी वह भटकी हुई है, क्योंकि अधिकांश पत्र–पत्रिकाएं किसी न किसी पंथ और सम्प्रदाय से संबंधित हैं। इस कारण वे वीतरागी धर्म और सामाजिक एकता के साथ निष्पक्ष रहकर धर्म और समाज का सही–सही मार्गदर्शन करने में सक्षम नहीं हैं। इस दिशा में सम्पादकों, पत्रकारों एवं लेखकों को निर्भीक, सहिष्णु, तटस्थ, उदार और अनेकान्तमयी वीतराग धर्म के सही स्वरूप से सुपरिचित और उसमें समर्पित भाव से श्रद्धावान होना अति आवश्यक व अनिवार्य है।

वैसे तो सभी सम्पादक एवं पत्रकार बंधु स्वयं को उक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्व गुण सम्पन्न ही समझते हैं, परन्तु उन्हें पाठकों की कसौटी पर खरे उतरने की आवश्यकता है। स्वयं भी वीतराग भाव से अपने–अपने अन्तःकरण को टटोलकर देखें तो कोई न कोई कमजोरी स्वयं को भी अनुभव ज्ञान में आ जाएगी; भले ही उसे दूसरों के सामने व्यक्त करने की स्थिति में न हों पर स्वयं में सुधार तो कर ही सकते हैं।

● सम्पादक – जैनपथ प्रदर्शक
ए–4, बापूनगर, जसयपुर (राज.)

जैन पत्रकारिता : स्वरूप और समीक्षा

❑ कपूरचन्द पाटनी

पत्रकारिता को समाज का चौथा स्तम्भ माना जाता है। अतः जैन पत्र–पत्रिकाओं से सम्बद्ध सभी पत्रकार सम्पादकों का यह नैतिक दायित्व बन जाता है कि वे जैन संस्कृति व जैन दर्शन के संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहायक बनें तथा श्रमण संस्कृति की गौरव गाथा को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपनी भूमिका एवं जिम्मेदारी को समझें तथा समाज के एक सजग प्रहरी की भूमिका को निष्पक्ष एवं निर्भय होकर अदा करें।

जैनधर्म स्याद्वाद एवं अनेकान्त सिद्धान्त का पक्षधर है। अतः किसी पूर्वाग्रह एवं हठाग्रह से समाज में विषमता फैलाने वाले एक पक्षीय समाचारों से बचना चाहिए।

स्वस्थ पत्रकारिता का तकाजा है कि समालोचना व्यक्तिपरक न होकर उद्देश्यपरक हो तथा विचार स्वातंत्र्य को बनाए रखते हुए मतभेद को मनभेद न बनने दें विपक्ष की बात को गंभीरता से सुनने का संयम एवं धैर्य बरतें। भाषा मर्यादित एवं आगमानुकूल रखें। अपने पाठकों को विचार–समाचार परोसें उन पर थोपें नहीं।

इसप्रकार यदि सभी पत्रकार अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं तो सचमुच एक बड़ी ताकत बनेकर समाज में अनेक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न कराने में सक्षम हो सकते हैं। आज हमारा समाज किन विकृतियों की गिरफ्त में हैं, जीवन शैली में किसप्रकार अहिंसा से दूरी बढ़ती जा रही है, समाज के प्रांगण में करुणा, दया, अहिंसा, नैतिकता, शाकाहार आदि की फसल क्यों नहीं उग पा रही है ? समाज में धर्म प्रभावना के नाम पर उत्सवप्रियता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर फूहड़पन किस कदर तेजी से फैल रहे हैं। जैन सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के क्षण के इन क्षणों में सम्पादक पत्रकारों की महनीय भूमिका है, गहन उत्तरदायित्व है।

जैन धर्मावलम्बियों की जनसंख्या के अनुपात में पत्र–पत्रिकाओं की बड़ी संख्या में प्रकाशन उनकी धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक निष्ठा और जाग्रत चेतना का प्रतीक है। देश में लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में प्रत्येक क्षेत्र से जैन पत्र प्रकाशित होते हैं। साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक करीब 150 की संख्या में हैं। जैन पत्रकारिता के दो मुख्य पक्ष हैं – वैचारिक और समाचार प्रेषणीयता। वैचारिकता में जैन पत्रकारिता मुख्यतः धर्म, दर्शन और तत्व विश्लेषण तक सीमित है।

जैन पत्रकारिता व्यवसाय न होकर एक विचार है। एक जीवन पद्यति है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में और भारतीय लोक जीवन तथा धर्म के साक्षात्कार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। जैन पत्रकारिता अहिंसक विचार, सेवाकार्य, वात्सल्यभाव, आध्यात्मिक स्फूरणा, नैमित्तक उन्नयन, शाकाहार, जीवदया, क्षमा, सहिष्णुता, प्रेम, मैत्री और अनेकान्त जैसे उत्कृष्ट मूल्यों के विकास के लिए समर्पित है।

❑ २० : जैन सम्वाद

निष्कर्षतः जैन पत्रकारिता की स्थिति निराशाजनक नहीं है। इसमें सतत विकास शीलता और नित्य नवीनता का बोध है। देश में शायद ही कोई ऐसा समुदाय हो जो इतने अल्पमत में होकर भी इतनी बड़ी संख्या में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित करता हो। स्वस्थ पत्रकारिता के लिए सद्विचारों से युक्त मानव मूल्यों का संवाहक होना अपेक्षित है और इसके लिए खण्डन–मण्डनात्मक, आरोप–प्रत्यारोप प्रवृत्तियों से परे रहकर आदर्शपरक यथार्थ किंवा व्यवहार–निश्चय का सत्य, शिवं और सुन्दरम् समन्वयी द्रव्यों का प्रस्तुतिकरण पत्रकार/सम्पादक का विशेष उत्तरदायित्व है।

● सम्पादक – जैन गजट
केदार रोड़, जैन गली, गोहाटी (आसाम)

पत्रकारिता : दायित्व एवं मर्यादा

❑ डॉ. शशिकान्त जैन

पत्रकारिता आधुनिक युग की देन है। घटनाओं के बारे में सही जानकारी देना समाचार पत्रों का विशेष दायित्व है। अपने देश में और देश के बाहर जो कुछ हो रहा है उसके बारे में जन साधारण को जानकारी मिले यह समाचार पत्रों का प्राथमिक उद्देश्य है। समाचारों पर टिप्पणी और विभिन्न विचारकों के विचारों का प्रकाशन जन साधारण को इन घटनाओं के विषय में जागरूक करने में सहायक होता है। परन्तु पत्रकारिता केवल समाचारों के प्रसारण तक ही सीमित नहीं है। सामाजिक, धार्मिक, शोधपरक एवं किसी विषय विशेष से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं का भी पत्रकारिता जगत में विषेष स्थान है।

जैन समाज में साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, चातुर्मासिक, षटमासिक आदि सर्वाधिक पत्रिकाएं बहुलता के साथ प्रकाशित होती हैं। अधिकांश पत्रिकाएं किसी एक आम्नाय, गुरु अथवा आस्था से जुड़ी होती हैं और उनका उद्देश्य मात्र अपनी बात का प्रचार करना होता है। उनसे समाज में जागरूकता फैलाने की आशा प्रायः नहीं होती।

पत्रकार का यह दायित्व बनता है कि वह जन साधारण को घटनाओं के संबंध में सही जानकारी देने के साथ ही सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र में जो कुरीतियां दिखाई देती हैं उनके प्रति लोगों को सचेत करे और वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप समाज को ढ़ालने के लिए प्रेरित करे। जो बात हम ईमानदारी से समाज के हित में समझते हैं उसे स्पष्ट रूप से कहना चाहिए।

●ज्योति निकुंज, चार बाग, लखनऊ (उ.प्र.)

जैन पत्रकारिता : कतिपय विचार बिन्दु

– सुरेश जैन 'सरल'

जैन पत्रकारिता का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि उसे समाज के 90 प्रतिशत लोग मात्र सेवा मानते हैं – साहित्य सेवा या धर्म सेवा। जबकि वर्तमान वैश्विक क्षेत्रफल में बसे हर देश के लोग पत्रकारिता को व्यवसाय मानते हैं, जो हर स्वतंत्र देश की दृष्टि में उचित है। वकीली, डाक्टरी, इंजीनियरी से लेकर कारपेन्ट्री और टेलरिंग तक के व्यवसायों की तरह ही हमें पत्रकारिता को भी मान्य करना होगा, तभी यह पनपेगी और इसकी वित्तीय साख बनेगी। लोग इसे उस राष्ट्र सेवा से जोड़ सकते हैं जो हमारे सैनिक करते हैं कि थोड़ी सी पगार लेते हैं पर अवसर आने पर प्राण होम कर देते हैं।

पत्रकार और सम्पादक में अंतर यह है कि जब वह कलम जीवी मैदान (फील्ड) पर कार्य करता है तो वह पत्र बोला जाता है मगर जब वह अखबार के कार्यालय की टेबिल संभालता है तो सम्पादक कहलाता है। माने फील्ड पर जर्नलिस्ट और आफिस में एडिटर। जैन पत्रकारिता का नेटवर्क सीमित है, देश के हर शहर, गांव में उसके दक्ष सम्वाददाता नहीं हैं। जो हैं वे शौकिया हैं या काम चलाऊ हैं अतः सम्पूर्ण पत्रकारिता उन्हीं के विश्वास पर चल रही है। एक व्यक्ति ने अपने नगर में घटना देखी और टूटी–फूटी भाषा में सम्पादकजी को चिट्ठी लिख दी। सम्पादकजी ने उस पर विश्वास कर छाप दिया। बड़ी बात यह है कि कोई चिट्ठी मिथ्या सिद्ध नहीं होती, इसलिए जैन पत्रकारिता चलती रहती है। एक मायने में वर्तमान राष्ट्रीय पत्रकारिता की तुलना में जैन पत्रकारिता प्रमाण, तथ्य और आंकड़ों की कलाबाजी के व्यापार में पीछे है। अन्य पत्रकारिता उक्त तीनों तथ्यों की जानकारी अपने नेटवर्क से प्राप्त कर ही समाचार छापती है। जैन अखबार अभी इस सदी में भी धनाभाव के कारण मात्र 'पत्रक' बन कर रह गए हैं। जबकि अन्य व्यावसायिक अखबार पत्रकारिता के नित नए आयाम रच रहे हैं। जैन पत्रकार को सदा वित्तीय संकट से जूझना पड़ता है वह अपने पत्र/पत्रिका के पत्ररंजन (गेट–अप) पर अधिक ध्यान नहीं दे पाता, जबकि अन्य लोग सजावट को प्रमुखता देते हैं। रोज उनके समक्ष वेस्ट गेट–अप की संतुष्टि अगड़ाई लेती हुई प्रतीत होती है। उनका अपना एक लेखक मंडल भी होता है, जिससे मनचाहे या तात्कालिक विषय पर लेखादि प्राप्त करने में दिक्कत नहीं होती। संकेत किया और विषय पर लेख हाजिर। वे लेखकों को धन्यवाद देकर प्रतिसाद भी देते हैं।

जैन पत्रकारिता मानद या मानसेवी सूत्रों पर चलती है। पत्रकार को वर्ष में एक–दो बार पत्र पुष्प श्रीफल और शॉल से संतोष करना पड़ता है, जबकि अन्य अखबारों के सम्पादकगण भारी वेतन या तय कमीशन प्राप्त करते हैं। अतः हम कह

सकते हैं कि देश की पत्रकारिता और जैन पत्रकारिता में तकनीकी अंतर या कहें विचार संप्रेषण का अंतर कुछ बड़ा नहीं है, यदि अंतर है तो वित्त व्यवस्था का। सामान्य पत्रकारिता केवल लाभ और लाभ के लिए होती है जिसमें अधिक से अधिक विज्ञापनों का दोहन किया जाता है, जबकि जैन पत्रकारिता नो लॉस नो गेन (न हानि न लाभ) के सूत्र पर चलकर ही संतुष्ट है क्योंकि उसे हर माह घाटे का डर लगा रहता है।

आप कह सकते हैं कि जैन पत्रकारिता प्रस्तुतिकरण में बहुत पीछे है। मैं इसे स्वीकार करता हूं, किन्तु यह सत्य भी बतला देना चाहता हूं कि वह वैचारिकता में अग्रणी है।

जैन पत्रकारों/सम्पादकों के समक्ष सबसे बड़ा शूल यह है कि देश में कभी उन्हें लेकर पत्रकारवार्ता का आयोजन नहीं किया जाता जबकि राष्ट्र स्तरीय सामाजिक समाधानों की प्राप्ति और उनके प्रचार–प्रसार के लिए यह अत्यन्त जरूरी है। गिरनार मसला, शिखरजी मसला, अयोध्या मसला, भ. महावीर जन्मभूमि मसला सहित अनेक बड़े मसले राष्ट्र के समक्ष सिर उठाए खड़े हैं पर किसी जैन राष्ट्रीय नेता या संत ने राष्ट्रीय स्तर पर जैन पत्रकार वार्ता आयोजित करने का कष्ट नहीं उठाया। जबकि वे गजरथ महोत्सव या किसी राष्ट्रीय गोष्ठी के पूर्व स्थानीय पत्रकारों की पत्रकार वार्ता अवश्य करते हैं, कभी–कभी उनमें एकाध जैन पत्रकार भी देखने को मिल जाता है। हमारे देश में शताधिक जैन पत्र–पत्रिकाओं के नाम चर्चा में हैं परन्तु क्या कारण है कि किसी मसले विशेष के लिए अभी तक सभी को एक साथ एक स्थान पर नहीं बुलाया जा सका। स्वागत सम्मान पुरस्कार के लिए दस पांच पत्रकारों को कभी बुलाया है, वह पृथक् बात है। संतों के चातुर्मास के समय किसी नगर या महानगर की व्यवस्था समिति चार माह तक स्थानीय चार छह पत्रों में समिति एवं संत के सचित्र समाचार प्रकाशित कराने में 25 हजार से 1 लाख रुपया तक व्यय कर डालती है इस बीच वह जैन अखबारों की चिन्ता नहीं करती अतः जैन पत्रकारिता पीछे तो रहेगी ही, प्रभावहीन भी कही जाती रहेगी।

समय रहते हर नगर और गांव की संस्थाओं, समितियों, ट्रस्टों, पुस्तकालयों, ग्रंथालयों मंदिरों आदि के लिए पत्र–पत्रिकाएं खरीदकर जुटाने की परम्परा चलानी होगी। इसी तरह हर जैन परिवार को कम से कम एक पत्र–पत्रिकाओं का आजीवन सदस्य बनना होगा। बड़े उद्योगपति और अन्य व्यवसायी प्रतिवर्ष कुछ राशि विज्ञापनों के माध्यम से जैन अखबारों की ओर जाने दें। जो अखबार विज्ञापन नहीं छापते उन्हें साल में एक दो बार महावीर जयन्ती और निर्वाणोत्सव के समय उपयुक्त राशि दान में भेजें ताकि जैन पत्रकारिता भी अन्यों की तरह हर बिन्दु पर

प्रगति कर सके और अन्य समाज के समक्ष अपनी साख बना सके पंगु न रही आवे।

जैन पत्रकारों का भी कर्तव्य है कि परिपक्व लेखक की रचना छापते समय भीरुता धारण न करे, बहादुर बनें क्योंकि रचना प्रकाशन के बाद वे नहीं लेखक उत्तरदायी होता है। वैसे भी आजकल सम्पादक सूचना छापने लगे हैं – 'लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।' इतना सबकुछ करने/लिखने के बाद भी सम्पादक किसी धारदार रचना को गुम कर मौन हो जाता है तो लेखक की तपस्या व्यर्थ चली जाती है। सम्पादक निष्पक्ष बना रहे और रचना छापने में अडिग रहे तब पत्र–पत्रिका सम्माननीय बनते हैं। मुंह देखकर नहीं चलना चाहिए।

प्रजातंत्र में सबके सुख–दुख प्रजा के समक्ष रखने वाली पत्रकारिता समाज से पुत्री की तरह लालन–पालन चाहती है। जब देश स्वतंत्र नहीं था, तब की बात अलग थी, तब पत्रकार शहीदी भावनाओं के साथ स्वेच्छा से कार्य करते थे और देश को स्वतंत्र होते देखना चाहते थे। अब वैसे बलिदान की आवश्यकता नहीं है, न ही स्वतंत्रता की। आवश्यकता है तो समाज के संस्कारों और सभ्यता की सुरक्षा की, जिसे पत्रकार से बढ़कर कौन कर सकता है।

● 293, गढ़ाफाटक, जबलपुर (म.प्र.)

पत्र प्रशंसा से नहीं, पैसों से प्रकाशित होते हैं

☐ रमेश कासलीवाल

मैं महसूस कर रहा हूं कि दिगम्बर जैन समाज के कई पत्र बंद हो चुके हैं और कई पत्र बंद होने की कगार पर हैं। मेरे पुण्य कर्म का उदय संतों और बुजुर्गों की कृपा मानता हूं कि 18 वर्ष से वीर निकलंक निर्बाध गति से प्रकाशित हो रहा है। मैंने 12 वर्ष की उम्र में 1959 में निकलंक बलिदान नाटक में निकलंक का अभिनय किया था, तब से आजतक 51 वर्ष से समाज में कार्य रहा हूं। दरी बिछाने, मंच लगाने, बैनर टांगने जैसे सभी काम तो मैंने किए हैं, किन्तु आज पुण्य कर्म का उदय है कि इतने संघर्ष के बाद मैं मंच पर तो सफल हूं ही पत्र सतत् चलाने में भी सफलता मुझे मिली है। जब मेरे जैसे व्यक्ति को पत्र निकालने में आर्थिक कठिनाई होती है तो साधारण व्यक्ति पत्र कैसे प्रकाशित कर सकता है। मैं मानता हूं कि मेरी लेखनी, वाणी और विचारों में प्रभावित करने की क्षमता है। मैं कार्यकर्ता पहले रहा हूं और पत्रकार बाद में। इसलिए समाज में मुझे उतनी परेशानी नहीं होती। जिस समाज में संवाद नहीं वह समाज प्रबुद्ध होकर भी प्रबुद्ध नहीं कहा जा सकता। छोटे–छोटे पत्र ही आपकी बात दस हजार मंदिरों तक नेतृत्व और संतों के पास पहुंचा सकते हैं। संतों एवं संस्थाओं के प्राइवेट लिमिटेड पत्र कितने प्रकाशित होंगे और कैसे पहुंचेंगे समाज के आम आदमी के पास। अतः छोटे पत्रों

को संतों को प्रेरणा देकर प्रकाश्ति करने में सहयोग करना चाहिए। मैं अक्सर कहता हूं कि हाथी वाले, घोड़े वाले, बाजे वाले, माईक वाले किराये के कलाकार सबको आप पैसा दिलवाते हो किन्तु जैन समाज के पत्र को सहयोग नहीं करते। यह कहां तक उचित है। जंगल में मोर नाचा, किसने देखा। कितना बड़ा भी कार्यक्रम हुआ तो कैसे बताओगे ? कितना भी वैभवशाली चातुर्मास हुआ हो तो कैसे बताओगे ? अखिल भारतीय संस्थाओं के पत्रों की स्थिति भी कुछ बहुत अच्छी नहीं है बिखरे हुए समाज को संवारने का माध्यम है पत्र। देश और विदेश को, संत और श्रावक तथा नेतृत्व में संवाद स्थापित करने का माध्यम है पत्र। अतः हमारा कर्तव्य है कि सभी संत और नेतृत्व संवाद के इस साधन को अवरुद्ध न होने दें। सहयोग का हाथ बढ़ायें। मैं सच कहता हूं कि मुझे तो सहयोग मिल जाता है, क्योंकि मेरा संघर्ष लम्बा है किन्तु आम पत्रकारों को पत्र प्रकाशन में कठिनाई होती है। पत्र निकालना एक साधन है उसे समाज का सहयोग मिलना चाहिए। किसी संस्था से कोई सहयोग दिला दे तो 11 लोग संस्था के पदाधिकारी कहते हैं आपको इतना सहयोग तो दिलवाया। उन्हें मालूम नहीं कि नियमित खर्च पत्रों में कितना आता है। खैर ! मैंने पत्रकारों की पीडा नजदीक से देखी है सहभागी रहा हूं और संघर्ष से गुजरता हूं इसलिए स्पष्ट लिखता हूं। मेरी मान्यता है कि सिर्फ प्रशंसा से पत्र नहीं चलते और वह समाज निर्जीव समाज है उसमें संवाद के साधन नहीं। आशा है संत और नेतृत्व तथा सक्षम श्रावक इस दिशा में विचार करेंगे। यह बात आम आदमियों के लिए नहीं सक्षम व्यक्तियों के लिए है जो सहयोग कर सकते हैं। जो सहयोग नहीं कर सकते उनका प्यार तो सभी पत्रकारों को मिलता है। पत्र मल्टीकलर और अच्छे कागज पर प्रकाशित होना चाहिए और पैसा नहीं लगना चाहिए यह कैसे संभव है ? जरा सोचें।

● सम्पादक – वीर निकलंक (मा.)
303, अमित अपार्टमेंट, 1/1 पारसी मोहल्ला, इन्दौर (म.प्र.)

कम्यूनिकेशन टुडे को गोल्ड अवार्ड

पब्लिक रिलेशन्स कौंसिल ऑफ इण्डिया के 17–18 मार्च 2011 को चण्डीगढ़ में आयोजित 5वें ग्लोबल कन्कलेव में जयपुर से प्रकाशित मीडिया त्रैमासिक पत्रिका 'कम्यूनिकेशन टूडे' को गोल्ड अवार्ड से पुरस्कृत किया। यह पुरस्कार पत्रिका को जनसम्पर्क तथा विज्ञापन पर गुणवत्ता शोधपरक सामग्री के प्रकाशन के लिए दिया गया। इस द्विभाषी पत्रिका के सम्पादक डॉ. संजीव भानावत को यह पुरस्कार 18 मार्च को होटल माउन्ट व्यू में आयोजित समारोह में एक्टरनल मैगजीन की केटेगरी में दिया गया। चण्डीगढ़ के वित्त सचिव श्री वी.के. सिंह तथा कौंसल जनरल ऑफ कनाडा श्री स्कॉट सिल्सर ने पुरस्कार में प्रतीक चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। श्री भानावत अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के वरिष्ठ सम्माननीय सदस्य हैं। संघ की ओर से हार्दिक बधाई।

जैन पत्रकारिता की प्रासंगिकता और हम

☐ हुकमचन्द जैन 'मेघ'

जैन पत्रकारिता का वक्त के इतने मुकाम तय करने के बाद अतीत की ओर पीछे मुड़कर देखें तो अहसास होता है कि वक्त की इस दौड़ में हमने बहुत कुछ खो दिया है। गुजरे अतीत के सामने पसरे वर्तमान के अंतराल को तीव्र गति से पार करने की चेष्टा में हमने पत्रकारिता कई मानकों की, बहुमान्य मूल्यों की अनदेखी की है। जैन पत्रकारिता के अंग प्रत्यंगों को सजाने संवारने में जिन महत्वपूर्ण कर्तव्यों को हम लोगों ने अनदेखा किया उससे जैन पत्रकारिता के उज्ज्वल भविष्य पर ही कुठाराघात हुआ है। **अच्छे संस्कारों के बीजारोपण एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना आदि का लक्ष्य लेकर प्रारंभ हुई हमारी पत्रकारिता में जो स्थान इन चीजों का कभी था वो अब हमारे दृष्टिकोण में न्यून होता जा रहा है।** ऐसे में स्वयं पत्रकारों के बीच ही न तो कर्तव्य बोध है और न ही प्रशिक्षण की ललक। निजी और सामाजिक रिश्तों के इन बिखरे–बिखरे टुकड़ों को हम कहां खोजें ? कहां खोजें ? इस विवशता ने हमें भटका दिया है। **लेकिन इस निराशाजनक वातावरण में भी जैन पत्रकारों का संगठन होना और उसे येन–केन–प्रकारेण चलाया जाना अपने आपमें एक साहसिक अभियान है।** किन्तु मैं यह अवश्य कहना चाहूंगा कि जिसतरह सम्पूर्ण समाज में सद्व्यवहार रूपी नदियों में बहता स्नेह जल सूख रहा है, उसका प्रभाव कमोवेश हम पर भी पड़ रहा है और हम संगठन का दुर्लक्ष्य करने लगे हैं। समाज को कोई ऐसा दिशाबोध देने में भी अब तक असफल हैं जिसकी अपेक्षा रखकर हमारी पत्रकारिता का कारवां प्रारंभ हुआ था। एक शायर के शब्दों में कहूं तो –

दब गया हूं शोर में मैं अपने ही। कितना तन्हा हूं कारवां बनकर।।

लेकिन इस कारवां में तन्हा होने की निराशा को यदि हम आत्मावलोचन में लें तो न केवल हम आत्म कल्याण करेंगे, बल्कि समाज कल्याण करने में भी सहयोगी बन पाएंगे। बहुत संभव है कि मेरे विचार आपको कुछ निराशावादी लगें और शायद रचनात्मकता विहीन भी, लेकिन यह सारा दोष केवल हमारा ही नहीं हैं, बल्कि साहित्यिक क्षेत्र में शताब्दी के अंतिम दशक के परिदृश्य को ध्यान से देखें तो इतिहास के अंत की घोषणा के साथ–साथ उत्तर आधुनिकतावादी विमर्शों ने समाज और समाजवाद को ही हाशिए पर सरकाने का काम तेजी से शुरू कर दिया था। साहित्य और संस्कृति में एक सकारात्मक हस्तक्षेप की बजाए अनुभववाद के स्थान पर बाजारवाद को तरजीह दी जाने लगी थी। पाठक और लेखक के बीच पत्रकारिता में उपभोक्तावाद का पनपना इस युग की सबसे बड़ी त्रासदी है। इस

प्रभाव ने साहित्य से जहां यथार्थवाद, सौद्देश्यता, जन पक्षधरता, मानवीय मूल्यों को क्षीण किया है, उसके साथ ही कला एवं अनुभव को भी पूंजी के सामने नतमस्तक कर दिया है। आज जैन पकारिता के प्रकाश में प्रकाशित हो रहे पत्रों का सबसे बड़ा अभाव सामाजिक सहयोग एवं पूंजी ही है।

यथार्थवाद और अनुभववाद की जगह जिस तरह पूंजीवाद सारे संसार में हावी हुआ है, सारा मीडिया भी पूंजी और पूंजीपतियों की जेब में चला गया है। ऐसे में हम लोगों ने भी इसी देखादेखी में सेठों और संतों की संधि को लपकने का काम प्रारंभ कर दिया है। आज जैन पत्रकारों के द्वारा प्रतिवर्ष कई करोड़ रुपए खर्च करके जो चार सौ से ज्यादा पत्र–पत्रिकाओं को निकाले जाने का परिश्रम हो रहा है, उसकी सार्थकता कितनी है यह मूल्यांकन अभी भी होना बाकी है। आखिर हम आधा तीतर, आधा बटेर बनकर क्यों अपना समय काट रहे हैं ? इस पर उदार मन से विचार करने की आवश्यकता है। क्योंकि जैसा कि आध्यात्मिक क्रांति के पुरौधा स्वामी विवेकानन्द ने कहा है – **'एक सच को हजार ढ़ंग से भी कहा जाए तो वो सच ही रहता है, उसे झूठ कहने की हिम्मत किसी को नहीं होती,** लेकिन हम इतना पुरुषार्थ, इतना परिश्रम करके भी समाज का वह विश्वास क्यों हासिल नहीं कर पा रहे हैं, जिसके हम हकदार हैं। इस पर चिन्ता करना हमारा विषय है और चिन्तन करना भी हमारा ही कर्तव्य। अतः कतिपय ऐसे बिन्दु जिन्हें आप कड़वा सच कह सकते हैं, इन्हें सामने लाते हुए मैं निवेदन करूंगा कि हम सब लोग इस दिशा में सकारात्मक रूप से सोचें और सामाजिक स्वीकार्यता के हमारे हक को आगे बढ़कर प्राप्त करें। हम यह न भूलें कि जैसे जगत में मेरू पर्वत से ऊंचा और आकाश से विशाल कुछ भी नहीं है वैसे ही अहिंसा धर्म के समान कोई धर्म नहीं है। हमें इतने ऊंचे अहिंसा दर्शन का सेवक बनकर ही कार्य करना है। सुनने में यह बात थोड़ी आदर्शवादी लगती है लेकिन यही हमारा कर्तव्य है और यही हमारी जैन पत्रकारिता के द्वारा की गई समाज सेवा। आईये उन बिन्दुओं पर विचार करें जो हमें हमारा प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त कराने में सहायक हो सकते हैं।

● **प्रतिबद्धता एवं नियमितता** : अहिंसा धर्म के पालन के लिए हमारी कलम समर्पित हो इसलिए हमें अपनी प्रतिबद्धता एवं नियमितता दोनों को ही बनाए रखना आवश्यक है। हजारों–हजार कारणों के बीच हमें सर्वप्रथम अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता, जीव मात्र के प्रति प्रतिबद्धता, करुणा, अनुकम्पा और सेवा भाव के जागरण का कार्य नियमितता से करना है। इससे चाहे हमारी कितनी ही उपेक्षा क्यों न हो, कितने ही कष्ट हमारे सामने क्यों न हों लेकिन एक आत्म संतोष हमें अवश्य होगा कि हम जो कर रहे हैं, वो सही दिशा में है। यदि हम इससे भटकेंगे तो हम सच्चे मायनों में जैन पत्रकारिता के उस उच्चतम मूल्य को भूल चुके होंगे जो कि हमारा श्रेष्ठ कर्म है, सबसे बड़ी आस्था है। अतः मेरा आप सभी से निवेदन

है कि आप व्यक्तिगत प्रशंसा या निन्दा के कार्य में ज्यादा लिप्त न होते हुए अहिंसा धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को हर परिस्थिति में शाश्वत बनाए रखें।

● **विजन और विचार :** पत्रकारिता के जानकार लोगों से मैंने अब तक जो जाना व सुना है, उसका एक ही निष्कर्ष है कि पत्रकार को अपने स्पष्ट विजन और स्वस्थ विचारों के लिए जाना जाना आवश्यक है। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हमें मानना होगा कि हम कहीं न कहीं दिग्भ्रमित हैं। वैचारिक दिग्भ्रमिता और दृष्टि का धुंधलापन पत्रकारिता की दृष्टि से ऐसे दोष हैं जो शून्य से शुरू करके शून्य पर ही समाप्त हो जाते हैं इस शून्य को तोड़ना हम सबकी जबाबदारी है। यदि हम ऐसा कर पाने में सफल होते हैं तो हमारा जैन पत्रकार संगठन करना, हमारा समय लगाना, तन–मन–धन खर्च करना ही नहीं हमारा जैन होना सार्थक होगा। वरना भाषा के भ्रष्टीकरण कें बीच जन–जागरण की जैसी आवश्यकता आज सारा संसार अनुभव कर रही है, इस बड़े काम से हम लोग वंचित रह जाएंगे या संभवतः हमें उसके लायक ही न समझा जाए। इसलिए मैं बारम्बार निवेदन करूंगा कि यदि जैन पत्रकारिता हमारे जीवन का एक सुकृत कर्म है तो हम लोग अपनी दृष्टि को किसी यशाकांक्षा, पदाकांक्षा या चंद टुकड़ों के लिए धुंधला न करें। अपने प्रखर विचारों के द्वारा समाज को जगाने का काम करें, सच बोलें, मगर सच इतना कड़वा न हो कि वह जहर बनकर सारे वातावरण को ही जहरीला बना दे।

● **कलात्मकता और प्रतिभा का आश्रयः** एक शायर ने कहा है –

आंख कान में आ जाते हैं, हम पहचान में आ जाते हैं।
नामों में खुशबू होती है, चेहरे ध्यान में आ जाते हैं।।

ये चेहरा ध्यान में लाने का काम साधना से होता है। सच कहूं तो यह एक साधना ही है जिसे हम कलात्मकता और प्रतिभा का आश्रय लेकर करते चलें तो हम बहुजन हिताय बहुजन सुखाय कार्य करने में सफल हो सकते हैं। पत्रकारिता तो वैसे भी कलात्मकता का ही पर्याय है। जो मनस्वी और प्रतिभावान हैं वह उतना ही अपनी प्रस्तुति को संवारने–सजाने में, उसके अंग–प्रत्यंग को निखारने में सफल होगा। प्रतिभा होगी तो कलात्मकता स्वयं अपनी गति से चलती जाएगी और एक वक्त ऐसा जरूर आएगा, इस खुशी की तलब हम सबको है क्योंकि पत्रकारिता एक कागजी प्रचार तो हमें दे ही देती है। लेकिन ये कागजी प्रचार सामाजिक ग्राह्यता भी बन सके, इसलिए हमें अपनी कलात्मकता और प्रतिभा को निखरते रहना जरूरी है। मान कर चलें कि इस व्यवसाय में धन्यवाद का स्थान नहीं है। यदि हम एक भी जगह चूके तो हमारे लिए आलोचनाओं के शूल सिर उठाकर खड़े हो जाएंगे । लेकिन हम कितना ही रचनात्मक काम क्यों न कर लें, असर होते–होते होता है। अतः अपनी आन्तरिक कला और कलात्मकता को अपनी भरपूर सर्जनात्मक चेतना के साथ संवारते चलें।

● **एक दिन तो मंजिल आएगी** : दोस्तो मैं आप ही के बीच का एक अदना व्यक्ति हूं, अतः कोई उपदेश देने की मुद्रा में कतई नहीं हूं। लेकिन यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जो मैंने सर्व साधारण के बीच जाकर, समाज के बीच जाकर संतों और सेठों के बीच उठ–बैठकर सीखा है, वह इतना ही है कि समाज और सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था हमारा उपयोग लेना तो जानती है लेकिन एक बार नहीं हजार बार हमें अनदेखा भी कर सकती है। यदि हम इन सब बातों से थक–हारकर बैठ जाएं तो हमारी स्थिति कैसी होगी ? इस बारे में एक गजल की कुछ पंक्तियां आपके सामने रख रहा हूं, शायद आपको इस आलेख का अनिवार्य हिस्सा लगे कि –

मेरे बच्चे भी पड़ौसी का हुनर ले लेते
इनको रोका नहीं जाता तो असर ले लेते।
वो तो अच्छा हुआ मैंने इन्हें मौका न दिया
वरना ये लोग मेरा दस्ते–हुनर ले लेते।
तुम नहीं जानते, शौहरत के तलबगारों को
ये कलम ही नहीं, हम लोगों का सर ले लेते।

कोई दीवार न गिरती, न तमाशा होता,
हम जो शब्दों में इशारों का हुनर ले लेते।
फिर ये बर्फीली हवाएं भला किस घर जातीं ?
हम भी बाजार से कुछ धूप अगर ले लेते।

दोस्तो ! यदि हम इतने चौकन्ने हैं कि बर्फीली हवाओं से बचकर बाजार में नहीं बिक रही धूप को सहेज सकें तो हमारी मंजिल हमें अवश्य मिलेगी। इसलिए आओ संगठन करें, सोचें, प्रतिभा निखारें और परस्पर सहयोग करें एक आवाज बनें। तभी हमारी आवाज सुनी जायेगी। हमें हमारी सामाजिक स्वीकृति आगे बढ़कर प्राप्त होगी।

मुझे प्रसन्नता है कि हम लोग अपनी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक परेशानियों के बीच में बार–बार साथ आते हैं और संगठन करने का जज्बा दिखाते हैं। ये जज्बा बना रहे, ये हौंसला बना रहे और हमारी ये आवाज इस तरह उभरे कि हम यह कहने के लायक रहें कि –

जो तौर है दुनियाँ का उसी तौर से बोलो।
बहरों का इलाका है जरा जोर से बोलो।।
इन्हीं शब्दों के साथ !

● सी–2, 2/156–157, सेक्टर–16
दिल्ली–110089

Trust Deed (प्रतिज्ञा–पत्र)

यह प्रतिज्ञा–पत्र (Indenture) दिनांक 10.04.2007 को जयपुर में श्री अखिल बंसल सुपुत्र श्री महेन्द्रकुमार, आयु 53 वर्ष, निवासी – 129, जादौन नगर–बी, स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर; जिसे कि यहाँ आगे संस्थापक (Settler) सम्बोधित किया है। एवं

1. श्री मिलापचंद डंडिया सुपुत्र श्री गेन्दीलाल डंडिया, आयु 75 वर्ष, सी–5 चिकित्सालय मार्ग, बापूनगर, जयपुर; जिन्हें कि यहाँ आगे न्यासी संबोधित किया है।

2. श्री महेन्द्रकुमार पाटनी सुपुत्र श्री भँवरलाल पाटनी, आयु 74 वर्ष, डी–127, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर; जिन्हें कि यहाँ आगे न्यासी संबोधित किया है।

3. डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल सुपुत्र श्री चुन्नीलाल बंसल, आयु 70 वर्ष, बी–369, ओ.पी.एम. कॉलोनी, अमलाई, जिला–शहडोल, मध्यप्रदेश; जिन्हें कि यहाँ आगे न्यासी संबोधित किया है।

4. डॉ. रमेशचंद जैन सुपुत्र श्री राजकुमार जैन, आयु 71 वर्ष, मु.पो. निवाई, जिला–टोंक (राजस्थान) जिन्हें कि यहाँ आगे न्यासी संबोधित किया है।

यहाँ संस्थापक (Settler) को अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का दिनांक 1 मार्च 2007 को श्री महावीरजी में संयोजक चुना गया है एवं अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के संचालक मण्डल ने पारमार्थिक ट्रस्ट निर्माण करने का निर्णय लिया है। एवं

ऐसी अवस्था में संचालन समिति के उक्त निर्णय के अनुसार यहाँ यह 5500/– अक्षरेण पाँच हजार पाँच सौ रूपये प्रारंभिक धनराशि से न्यास निर्मित एवं घोषित किया जा रहा है। एवं

ऐसी अवस्था में न्यासी (ट्रस्टियों) ने संस्थापक के अनुरोध पर ट्रस्ट के लिए 5500/– रूपये की धनराशि स्वीकार की है और ट्रस्ट में उल्लिखित उद्देश्य भावना तथा कार्य करने के लिए न्यासी के रूप में स्वीकृति प्रदान की है।

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ न्यास

संविधान

1. न्यास का नाम : अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ न्यास रहेगा।

2. न्यास का कार्यालय : पंजीकृत कार्यालय 129, जादौन नगर–बी, स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर–302018 में रहेगा।

3. न्यास का कार्यक्षेत्र : संपूर्ण भारतवर्ष होगा।

4. उद्देश्य व प्रवृत्तियाँ : इस ट्रस्ट/न्यास के निम्नलिखित उद्देश्य व प्रवृत्तियाँ होंगी –

(i) भारत की सभी भाषाओं की जैन पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादकों को संगठित कर उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्न करना।

(ii) स्वस्थ और रचनात्मक पत्रकारिता के विकास हेतु आवश्यक संसाधन एवं मार्गदर्शन उपलब्ध कराना और नैतिक व धार्मिक मूल्यों के संवर्धन हेतु सत्साहित्य का प्रकाशन करना।

(iii) जैनदर्शन, अध्यात्म (वीतरागता), तत्त्वज्ञान, सिद्धांत, साहित्य, संस्कृति, इतिहास व कला आदि का मीडिया के प्रभावी साधनों द्वारा सर्वाधिक प्रचार–प्रसार और संरक्षण करना।

(iv) जैन पत्र संपादकों, पत्रकारों व विद्वानों के लिए सामाजिक सुरक्षा, पेंशन, चिकित्सकीय, कानूनी एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कर उनके हितों को संरक्षित करना तथा ससम्मान जीवन यापन हेतु स्थिति निर्मित करना।

(v) जैन पत्र संपादकों के शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था करना व सार्वजनिक उपयोग हेतु शोध पुस्तकालयों तथा शोध संस्थानों की स्थापना करना।

(vi) स्वस्थ पत्रकारिता के माध्यम से जैन समाज के सभी पंथों, सम्प्रदायों एवं उपजातियों में सुसंवाद, अविरोध भाव एवं भावात्मक एकता का वातावरण निर्मित करना एवं जैन आगम के मूल सिद्धांतों का निर्विवाद एवं समन्वित रूप से प्रचार–प्रसार करना तथा आगम विरुद्ध पक्षपाती एवं विघटनवादी प्रवृत्तियों को हतोत्साहित करना।

(vii) जैन पत्र पत्रिकाओं के वैचारिक संबल हेतु 'जैन न्यूज सर्विस' की स्थापना करना व उसके माध्यम से संबंधित पत्र पत्रिकाओं व जैन संचार माध्यमों को समाचार व लेखादि प्रेषित करना।

(viii) न्यास के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जमीन–जायदाद खरीदना, अनुदान लेना तथा आवश्यकतानुसार धनराशि एकत्र करना।

(ix). केन्द्र व राज्य सरकारों से जैन पत्र सम्पादकों के हितों के लिए संरक्षण प्राप्त करना और अन्य पत्रकारों की तरह उन्हें सभी सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु प्रयत्नशील रहना।

(x) जैन पत्र सम्पादकों, लेखकों, ख्यातिप्राप्त विद्वानों व पत्रकारों को पुरस्कृत व सम्मानित करना।

(xi) कानून प्रदत्त अधिकारों, सुविधाओं की प्राप्ति हेतु जैन समाज का मार्गदर्शन करना, साथं ही जनसमान्य के सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु जनजागरण के कार्य कर जीवन का उन्नयन करना।

5. सदस्यता – अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ की कार्यकारिणी समिति की सहमति से निम्न योग्यताएं रखने पर कोई भी व्यक्ति सदस्य बन सकता

है –

(i) जैन पत्र–पत्रिकाओं के प्रधान सम्पादक, सहयोगी सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल के सदस्य।

(ii) जैनेतर पत्र–पत्रिकाओं से सम्बन्धित जैन पत्रकार, संवाददाता तथा नियमित रूप से लेखन कार्य करने वाले लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

(iii) न्यास के उद्देश्यों में विश्वास रखता हो। (iv) वयस्क हो। (v) भारतीय नागरिक हो।

(vi) पागल एवं दीवालिया न हो।

6. सदस्यता का वर्गीकरण –

न्यास में पांच प्रकार के सदस्य होंगे –

(i) शिरोमणि संरक्षक (ii) परम संरक्षक (iii) संरक्षक

(इस वर्ग में पत्रकारिता एवं पत्रकारों के शुभेच्छु महानुभावों को स्थान दिया जायेगा।)

(iv) आजीवन सदस्य (v) वार्षिक सदस्य

7. सदस्यों द्वारा देय शुल्क –

(i) शिरोमणि संरक्षक – अवधि आजीवन; सदस्यता शुल्क 51हजार रूपये एकमुश्त।

(ii) परम संरक्षक – अवधि आजीवन; सदस्यता शुल्क 31हजार रूपये एकमुश्त।

(iii) संरक्षक – अवधि आजीवन; सदस्यता शुल्क 21हजार रूपये एकमुश्त।

(iv) आजीवन सदस्य – अवधि आजीवन; सदस्यता शुल्क 11सौ रूपये एकमुश्त।

(v) वार्षिक सदस्य – अवधि एक वर्ष सदस्यता शुल्क 100 रूपये वार्षिक।

● सम्पादक संघ के कार्यों में सहयोग करने वाले विशिष्ट महानुभावों को परामर्शदाता के रूप में शामिल किया जा सकता है। उनके द्वारा दिए गए परामर्श पर कार्यकारिणी समिति विचार करेगी।

8. सदस्यता की प्राप्ति – न्यास की सदस्यता का इच्छुक व्यक्ति निर्धारित आवेदन प्रपत्र भरकर देगा। कार्यकारिणी समिति की स्वीकृति के उपरांत सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही आवेदक सदस्य माना जायेगा।

9. सदस्यता समाप्ति/निष्कासन – किसी भी सदस्य की मृत्यु हो जाने पर उसकी सदस्यता समाप्त समझी जाएगी। वार्षिक सदस्यों का सदस्यता शुल्क अगले वर्ष 30 जून तक न आने पर उनकी सदस्यता समाप्त समझी जाएगी

● निम्नांकित किसी एक या अधिक कारणों से कार्यकारिणी समिति अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के किसी भी सदस्य की सदस्यता निरस्त कर

सकती है –

(i) किसी भी सदस्य का त्यागपत्र स्वीकृत होने पर

(ii) किसी भी सदस्य का दीवालिया होने अथवा पागल घोषित किये जाने पर तथा न्यायालय से दण्डित किये जाने पर

(iii) किसी भी सदस्य द्वारा संपादक संघ के उद्देश्यों एवं गरिमा के विरुद्ध कार्य किये जाने पर

● कार्यकारिणी समिति द्वारा अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की सदस्यता से निष्कासित सदस्य निष्कासन से एक माह के अन्दर अपने निष्कासन के विरुद्ध साधारण सभा को अपील कर सकता है।

10. साधारण सभा – सभी शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, आजीवन एवं वार्षिक सदस्य मिलकर साधारण सभा का निर्माण करेंगे।

11. साधारण सभा के अधिकार एवं कर्तव्य –

(i) कार्यकारिणी समिति के (8 पदाधिकारी एवं 13 सदस्य) 21 सदस्यों का चयन। साधारण सभा की बैठक में अध्यक्ष का चुनाव प्रत्यक्ष मतदान द्वारा होगा। अध्यक्ष महामंत्री का चयन करेगा तथा वे दोनों मिलकर कार्यकारिणी समिति (संचालक मण्डल) का गठन करेंगे। इस गठन को साधारण सभा की अनुमोदना आवश्यक होगी।

(ii) वार्षिक बजट पारित करना

(iii) कार्यकारिणी समिति के निर्णयों की आवश्यकतानुसार समीक्षा करना।

(iv) साधारण सभा में उपस्थित 2/3 के बहुमत से संविधान में संशोधन।

12. साधारण सभा की बैठक –

(i) साधारण सभा की वर्ष में एक बैठक अनिवार्य होगी। आवश्यकतानुसार विशेष बैठक भी बुलाई जा सकती है। साधारण सभा की बैठक बुलाने का अधिकार कार्यकारिणी समिति को होगा।

(ii) साधारण सभा की बैठक का कोरम कुल सदस्यों का 1/3 होगा। बैठक की सूचना सभी सदस्यों को 15 दिन पूर्व तथा आवश्यक बैठक की सूचना 7 दिन पूर्व देना अनिवार्य होगा।

(iii) कोरम के अभाव में बैठक स्थगित हो जाएगी जो पुनः उसी दिन निर्धारित समय व स्थल पर होगी। स्थगित बैठक में कोरम की कोई आवश्यकता नहीं होगी लेकिन एजेन्डा पूर्ववत् होगा।

(iv) साधारण सभा की बैठक में कोई भी प्रस्ताव सभा में उपस्थित सदस्यों के साधारण बहुमत से पारित माना जायेगा; परन्तु संविधान संशोधन के लिए 2/3 का बहुमत आवश्यक होगा।

(v) साधारण सभा के 2/3 सदस्यों के लिखित आवेदन पर कार्यकारिणी

समिति को साधारण सभा की बैठक एक माह के भीतर बुलाना अनिवार्य होगा।

13. कार्यकारिणी समिति –

(i) कार्यकारिणी समिति में 1 अध्यक्ष, 1 कार्याध्यक्ष, 1 उपाध्यक्ष, 1 महामंत्री, 1 मंत्री, 1 संगठन मंत्री, 1 प्रचार मंत्री तथा 1 कोषाध्यक्ष सहित 21 सदस्य होंगे। न्यास के पांचों संस्थापक न्यासी मताधिकार सहित कार्यकारिणी समिति के पदेन स्थायी सदस्य होंगे।

(ii) कार्यकारिणी समिति का कार्यकाल 3 वर्ष का होगा परन्तु किसी कारणवश चुनाव न हो पाने की स्थिति में वही कार्यकारिणी नये चुनाव तक कार्य करती रहेगी परन्तु यह कार्यकाल कुल चार वर्ष से अधिक नहीं होगा।

(iii) कार्यकारिणी समिति का कोई भी पदाधिकारी एक पद पर लगातार दो कार्यकाल से अधिक नहीं रह सकेगा तथा कार्यकारिणी समिति का कोई भी सदस्य लगातार तीन कार्यकाल से अधिक कार्यकारिणी का सदस्य नहीं रह सकेगा।

(iv) किसी भी पंदाधिकारी या सदस्य के निधन हो जाने पर अथवा किसी कारण से स्थान रिक्त होने पर कार्यकारिणी समिति बहुमत से साधारण सभा के सदस्यों में से किसी का भी चयन (Co-option) कर सकेगी।

14. कार्यकारिणी समिति के अधिकार व कर्तव्य –

(i) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की साधारण सभा की बैठक आदि की व्यवस्था करना तथा अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के स्वीकृत उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयत्न करना।

(ii) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के लिए विभिन्न स्रोतों से नियमानुसार अनुदान, चंदा, सदस्यता शुल्क चल–अचल सम्पत्ति, राशि आदि प्राप्त करना और उसकी समुचित व्यवस्था करना।

(iii) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ को आर्थिक व शैक्षणिक दृष्टि से समुन्नत करने के लिए विभिन्न योजनाएं बनाकर उनको यथासंभव साकार करना। समान उद्देश्य वाली संस्थाओं से आर्थिक व शैक्षणिक सहयोग प्राप्त करना।

(iv) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ को राज्य और केन्द्र से मान्यता दिलवाना तथा तदनुसार उनसे अनुदान आदि भी प्राप्त करना।

(v) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ को सुचारू रूप से चलाने के लिए एवं उसकी प्रगति के लिए अन्य आवश्यक नियम आदि बनाना तथा आवश्यकतानुसार प्रान्तीय इकाई व उप समिति आदि गठित करना।

(vi) नए सदस्य बनाना तथा सदस्यों के त्यागपत्र स्वीकार करना।

(vii) विधान में आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु साधारण सभा की बैठक के लिए प्रस्ताव तैयार करना।

(viii) साधारण सभा की बैठक बुलाना

15. कार्यकारिणी समिति की बैठक –

(i) अध्यक्ष की सहमति से कार्यकारिणी समिति की बैठक वर्ष में दो बार आयोजित की जायेगी। कार्यकारिणी समिति के कम से कम ग्यारह सदस्यों के लिखित अनुरोध पर कार्यकारिणी समिति की बैठक एक माह में बुलाना अनिवार्य होगा।

(ii) कार्यकारिणी समिति की बैठक की सूचना सभी सदस्यों को 10 दिन पूर्व तथा आवश्यक बैठक की सूचना 5 दिन पूर्व देना अनिवार्य होगा।

(iii) कार्यकारिणी समिति का कोरम 1/3 का होगा। कोरम के अभाव में बैठक स्थगित हो जाएगी जो पुनः उसी दिन निर्धारित स्थान व समय पर होगी। स्थगित बैठक में कोरम की आवश्यकता नहीं होगी किन्तु विचारणीय विषय वही होंगे। ऐसी स्थगित बैठक में उपस्थित सदस्यों में दो पदाधिकारियों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। ग्यारह सदस्यों के लिखित अनुरोध पर आहुत बैठक में कोरम पूरा न होने पर वह बैठक रद्द मानी जायेगी।

(iv) कोई संकल्प एवं प्रस्ताव जो सभी सदस्यों के बीच लिखित रूप से परिचालित किया जाता है और तत्समय के लिए सदस्यों के बहुमत द्वारा पारित किया जाता है; वह उतना ही विधि मान्य और प्रभावी होगा जितना सम्यक् रूप से बुलाई गई बैठक में पारित होने पर होता है।

16. पदाधिकारियों के अधिकार व कर्तव्य –

अ. अध्यक्ष के अधिकार व कर्तव्य –

(i) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की साधारण सभा व कार्यकारिणी समिति की बैठकों की अध्यक्षता करना।

(ii) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की सभी प्रवृत्तियों को संरक्षण प्रदान करना तथा किसी विवाद के उपस्थित होने पर निष्पक्षतापूर्वक उसे निपटाना।

(iii) कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्धारित राशि तक और आवश्यकता पडने पर कार्य सम्पन्नता हेतु अधिक राशि व्यय कर उसे कार्यकारिणी समिति की आगामी बैठक में पुष्टि व स्वीकृति कराना।

(iv) कार्यकारिणी समिति द्वारा स्वीकृत व अनुमोदित कार्यक्रमों की देखरेख केरना व आवश्यकतानुसार निर्देश देना व अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का प्रतिनिधित्व करना।

(v) कार्यकारिणी समिति से संबंधित कानूनी कार्यवाहियों में अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का प्रतिनिधित्व करना या प्रतिनिधि नियुक्त करना।

(vi) कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारियों को मार्गदर्शन देना व उनके कार्यों का निरीक्षण करना।

ब. कार्याध्यक्ष के अधिकार व कर्तव्य –

अध्यक्ष की अनुपस्थिति में साधारण सभा व कार्यकारिणी समिति की बैठक की अध्यक्षता करना तथा उस समय समस्त अध्यक्षीय दायित्वों का निर्वहन करना। अध्यक्ष द्वारा प्रदत्त कार्यों को संपादित करना।

स. उपाध्यक्ष के अधिकार एवं कर्त्तव्य –

अध्यक्ष द्वारा प्रदत्त कार्यों को संपादित करना। अध्यक्ष एवं कार्याध्यक्ष दोनों की अनुपस्थिति में साधारण सभा व कार्यकारिणी समिति की बैठक की अध्यक्षता करना तथा उस समय समस्त अध्यक्षीय दायित्वों का निर्वहन करना।

द. महामंत्री के अधिकार व कर्त्तव्य –

(i) कार्यकारिणी समिति द्वारा स्वीकृत समस्त योजनाओं व कार्यों को मूर्त रूप देना व समस्त गतिविधियों का संचालन करना। अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की साधारण सभा एवं कार्यकारिणी समिति की बैठक आहुत करना।

(ii) कार्यालय व अपने कार्यक्षेत्र का पूर्णतः संचालन, नियमन व नियंत्रण करना तथा पूर्ण व्यवस्था बनाए रखना।

(iii) अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के मुख्य कार्यकारी प्रमुख के रूप में दायित्व का निर्वहन करना।

(iv) वार्षिक बजट तैयार करना, वार्षिक रिपोर्ट तैयार करना।

(v) बिल, बाउचर, वेतन चिट्ठे आदि पास करना।

(vi) बजट के अनुसार आय–व्यय का संतुलन रखना, व्यय पर नियंत्रण रखना। कोषाध्यक्ष को पूर्ण सहयोग व परामर्श देना।

(vii) कर्मचारियों में अनुशासन बनाए रखने हेतु उन पर नियंत्रण रखना, अनुशासन भंग करने वालों के विरुद्ध अविलम्ब कार्यवाही करना तथा अनुशासन भंग की समस्त कार्यवहियों को कठोर व प्रभावकारी ढंग से प्रतिरोध करना।

(viii) साधारण सभा व कार्यकारिणी समिति की बैठकों की कार्यवाही विवरण का रिकॉर्ड तैयार करना।

(ix) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का सम्पूर्ण रिकार्ड रखना।

य. मंत्री के अधिकार एवं कर्तव्य –

(i) महामंत्री द्वारा प्रदत्त कार्यों का निष्पादन करना।

(ii) महामंत्री के कार्यों में सहयोग प्रदान करना तथा महामंत्री की अनुपस्थिति में उसके कार्यों को सम्पन्न करना।

र. संगठन मंत्री के अधिकार व कर्तव्य –

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के संगठन के ढ़ाँचे को सुदृढ़ करना व महामंत्री द्वारा प्रदत्त कार्यों का निष्पादन करना।

ल. प्रचार मंत्री के अधिकार व कर्तव्य –

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा सम्पादित कार्यों का प्रचार– प्रसार करना तथा महामंत्री द्वारा प्रदत्त कार्यों का निष्पादन करना।

व. कोषाध्यक्ष के अधिकार व कर्तव्य –

(i) कोष के आय–व्यय का हिसाब रखना तथा उसे प्रतिवर्ष ऑडिट कराना।

(ii) बैंक खातों का हिसाब रखना, मिलान करना, चैक बुक, पे–इन स्लिप आदि को रखना।

(iii) वार्षिक हिसाब का ऑकड़ा तैयार करना व बजट बनाने में महामंत्री को पूर्ण सहयोग देना।

(iv) कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्धारित राशि तक आवश्यकतानुसार व्यय करना, तथा अन्य पदाधिकारियों द्वारा किये गये निर्धारित राशि तक के व्यय हेतु कोष उपलब्ध कराना।

17. न्यास की संपत्ति –

(i) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की समस्त सम्पत्ति और सभी प्रकार की शक्तियाँ कार्यकारिणी समिति में निहित होगीं।

(ii) अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का बैंक खाता किसी भी शिड्यूडल बैंक में संचालित किया जाएगा। बैंक खाता अध्यक्ष / महामंत्री / कोषाध्यक्ष द्वारा संचालित किया जावेगा। खाता संचालन हेतु इन तीनों में से किन्हीं दो पदाधिकारियों के हस्ताक्षर आवश्यक होंगे।

(iii) वर्तमान में न्यास की सम्पत्ति में प्रत्येक स्थायी न्यासी द्वारा न्यास को दिये गये 1100/– रुपये यानी कुल 5500/– रुपये अक्षरे पॉच हजार पॉच सौ रुपये मात्र हैं। कार्यकारिणी समिति अपने विवेकानुसार न्यास की किसी सम्पत्ति का प्रवहन और समनुदेशन कर सकेगी और चंदा प्राप्त कर सकेगी।

18. कोष सम्बन्धी विशेष अधिकार –

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के हित में व कार्य एवं समय की आवश्यकतानुसार निम्न पदाधिकारी बजट के अतिक्ति निम्न सीमा में व्यय स्वीकृत कर सकेंगे।

(i) अध्यक्ष 1000 रुपए तक

(ii) महामंत्री 500 रुपए तक

19. आय–व्यय का अंकेक्षण –

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के समस्त लेखे–जोखे का समय–समय पर कार्यकारिणी समिति द्वारा नियुक्त आंतरिक अंकेक्षक द्वारा अंकेक्षण किया जाएगा। आंतरिक अंकेक्षक कार्यकारिणी समिति का सदस्य नहीं होगा। वार्षिक अंकेक्षण कार्यकारिणी समिति द्वारा नियुक्त अंकेक्षक से कराया जाएगा। लेखा वर्ष 1 अप्रेल से 31 मार्च तक होंगा।

20. विधान में संशोधन –

जैन आम्नाय को कायम रखते हुए विधान के किसी भी अनुच्छेद, धारा, नियम, उपनियम में आंशिक या पूर्ण कोई भी संशोधन किया जा सकता है। संशोधन के उद्देश्यों के लिए बुलाई गई विशेष आम सभा में उपस्थित सदस्यों के 2/3 बहुमत से उक्त संशोधन पारित किया जा सकेगा। विधान में संशोधन हेतु बुलाई गई सभा की सूचनामय एजेन्डा के अध्यक्ष की आज्ञा से महामंत्री द्वारा 21 दिन पूर्व देना आवश्यक होगा।

21. विवाद का निराकरण –

इस अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का गठन अखिल बंसल द्वारा किया गया है, वे इसके संस्थापक हैं। अतः अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ न्यास के संबंध में कोई भी विवाद, मत–वैषम्य होने पर संस्थापक तथा साधारण सभा का निर्णय अन्तिम एवं मान्य होगा। वह निर्णय अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ न्यास के सभी सदस्यों पर बंधनकारी होगा जिसको किसी भी हालात में चुनौती नहीं दी जा सकेगी तथा पंच निर्णय अधिनियम 1996 के प्रावधान लागू होंगे।

22 इस न्यास के रजिस्ट्रीकरण के समय पदाधिकारियों के नाम व पते निम्न प्रकार हैं –

अध्यक्ष : श्री मिलापचंद डण्डिया पुत्र श्री गेंदीलालजी डण्डिया,
सी–5, चिकित्सालय मार्ग, बापूनगर, जयपुर

महामंत्री : श्री अखिल बंसल पुत्र श्री महेन्द्रकुमार बंसल
129, जादौन नगर–बी, स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर

कोषाध्यक्ष : श्री महेन्द्रकुमार पाटनी पुत्र श्री भँवरलाल पाटनी
डी–137, सावित्री पथ , बापू नगर, जयपुर

सदस्य : डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल सुपुत्र श्री चुन्नीलाल जैन,
बी–169, ओ.पी.एम.कॉलोनी, अमलाई, जि.–शहडोल (म.प्र.)

सदस्य : डॉ. रमेशचंद जैन सुपुत्र श्री राजकुमार जैन
मु. पो. निवाई, जिला–टोंक (राजस्थान)

इन अनुच्छेदों के निष्पादन रजिस्ट्रीकरण के पश्चात शीघ्र संचालक मण्डल की बैठक अन्य पदाधिकारियों के व न्यासियों के निर्वाचन के लिए संयोजित की जायेगी।

आचार्यश्री से रूबरू हुए जैन पत्रकार एवं लेखक

20 तीर्थंकरों एवं अनन्तानंत सिद्धों की निर्वाणस्थली श्री सम्मेदशिखरजी में आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने ससंघ 14 जुलाई को चातुर्मास की स्थापना की। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत के प्रायः सभी प्रदेशों से हजारों श्रद्धालु उपस्थित थे। इसी अवसर पर 14, 15, 16 जुलाई को जैन पत्र सम्पादक संघ का त्रिदिवसीय अधिवेशन आयोजित किया गया। अधिवेशन के अन्तिम दिन पत्रकारों ने आचार्यश्री के समक्ष विभिन्न जिज्ञासाएं रखीं जिनका तत्वपरक समाधान आचार्यश्री ने किया। इस अवसर पर डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, श्री अखिल बंसल, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, डॉ. कपूरचन्द जैन, डॉ. फूलचद 'प्रेमी', डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, डॉ. विमला जैन, डॉ. ज्योति जैन, श्री कपूरचन्द पाटनी, श्री सुमतकुमार जैन आदि उपस्थित थे। आचार्यश्री से चर्चा का सारांश यहां प्रस्तुत है। आचार्यश्री के पास बैठे तो निश्चित ही अनेक प्रश्न उभरकर आए क्योंकि समाधान जहां हैं वहीं तो प्रश्न होते हैं। कुछ ऐसे ही प्रश्नों का साक्षात्कार आचार्यश्री से हुआ और समाधान भी मिले।

❖ **अखिल बंसल :** जैन समाज विघटन के कगार पर है। समाजिक एकता के लिए क्या कदम उठाना चाहिए ?

आचार्यश्री : आज समाज में नियंत्रण, अनुशासन जैसे शब्द खत्म होते जा रहे हैं। एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना भी बदलती जा रही है। अहम का पोषण हो रहा है। कोई किसी की सुनता नहीं। हम अपने प्रवचनों, उपदेशों में ही बात कह सकते हैं बाकी आप लोग इस संबंध में कदम उठाएं।

❖ **चीरंजीलाल बगड़ा :** साधुओं में शिथिलाचार चरम सीमा पर पहुंच रहा है। इसे कैसे रोका जा सकता है ?

आचार्यश्री (हंसते हुए) : देखो भाई ! मेरा संघ इन सबसे दूर है। हमारे लिनयम, संयम साधना से आप सब परिचित हैं। हमारे यहां कोई शिथिलता नहीं है जितना.. ..... बीच में ही एक पत्रकार बंधु ने कहा कि कुछ मुनिगण ए.सी. के बिना कमरों में ही प्रवेश नहीं करते, सभा का पूरा संचालन स्वयं करते हैं। आहार चर्या में भी विसंगति दिखाई देने लगी है।

आचार्यश्री : जैसे–जैसे दवा की जा रही है वैसे ही वैसे मर्ज बढ़ता जा रहा है। मैं तो स्वयं को/अपने संघ को देख रहा हूं । बाकी को आप लोग देखें।

❖ **अखिल बंसल :** वर्तमान में एकल विहार की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

आचार्यश्री : समय, परिस्थिति को देखते हुए आज एकल विहार अनेक स्थानों पर विसंगतिपूर्ण हो जाता है। साधु की चर्या आदि पर भी प्रभाव पड़ता है। समाज और साधु के संबंधों पर भी असर पड़ता है। पर भाई सुन कौन रहा है ?

❖ **डॉ. विमला जैन :** साधुओं में तंत्र, मंत्र, गंडा ताबीज आदि का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इस बहाने खूब धन एकत्र किया जा रहा है। ऐसे में वीतराग धर्म।

आचार्यश्री : जब आचार्य शांतिसागरजी महाराज दक्षिण से उत्तर की ओर विहार कर रहे थे तो उनसे कहा कि कोई मंत्र सिद्ध कर लो तब उन्होंने कहा कि

णमोकार मंत्र से बढ़ा कोई मंत्र है क्या ? आचार्यश्री वीरसागरजी से लेकर आज तक कोई मंत्र–तंत्र विद्या में कभी नहीं पड़ा और *मणि तंत्र मंत्र बहु होई मरते न बचावे कोई।* आजकल मस्तक पर टीका लगाते हैं, संत माला बांटते हैं, पुड़िया बांटते हैं, हाथ में धागा बांधते हैं। श्रावक भी कहते हैं कि वे तो डाक्टर समझकर आते हैं। हम भी यह सब सुनते रहते हैंपर हम सब यह नहीं करते न ही हमारे संघ में कोई करता है।

❖ **अखिल बंसल :** आज अनेक स्थानों पर जैन समाज का एक वर्ग पद्मावती जागरण व नवरात्रा करने लगा है, क्या ऐसे में वीतराग धर्म की विराधना नहीं होती ?

आचार्यश्री : हमारी परम्परा में देवी की आराधना नहीं होती है। उनके सम्मान का ध्यान रखा जाता है। शासन देवी–देवता आदरणीय हैं पूजनीय नहीं। भगवान पार्श्वनाथ के मस्तक पर अभिषेक करते हुए फण पर नहीं फण को देखकर तो स्मरण करना चाहिए कि किस तरह भगवान पर उपसर्ग हुआ कैसे शांत भाव से सहन किया। नवरात्रा कहीं भी आगम सम्मत नहीं है।

❖ **डॉ. ज्योति जैन :** मंगल कलश स्थापना और पिच्छी परिवर्तन के नाम पर धन एकत्र होना कहां तक उचित है ?

आचार्यश्री : जैसे–जैसे चातुर्मास में खच्र बढ़ते जा रहे हैं। चातुर्मास स्थापना में उतने ही मंहगे कलश होते जा रहे हैं। मुझसे भी कहा गया कि 22वां चातुर्मास है 22 कलश स्थापित हों। पर मैंने मना कर दिया कि हमारे यहां कोई कलश की पूजा नहीं, कोई मंत्र जाप नहीं न ही पैसे डाले जाते हैं।

❖ **डॉ. ज्योति जैन :** आचार्यश्री ! जब मुनियों के इर्द–गिर्द रहने वालों व उनके खास बनने वालों में आचरण का अभाव देखते हैं तो समाज में भी गंदा संदेश जाता है।

आचार्यश्री : संयम मार्ग पर चलने वालों के साथ चलने वालों का एक आचरण तो होना ही चाहिए। मुंह में गुटका रखें कैसे आप धर्म की बात सुन सकते हैं।

❖ **डॉ. फूलचन्द 'प्रेमी' :** क्या साधुओं के लिए देव दर्शन आवश्यक है ?

आचार्यश्री : मेरे लिए आवश्यक है। दूसरों का क्या है इस संबंध में क्या कह सकता हूं। (प्रेमीजी पर चुटकी लेते हुए) आप तो मूलाचार में रचे–बसे हैं हम तो चल रहे हैं।

❖ **प्रेमीजी :** क्या मुनि गृहस्थों को पूजन की प्रेरणा दे सकता है ?

आचार्यश्री : गृहस्थ पूजा अभिषेक आदि करे मुनि देखें लेकिन मुनिजी के निमित्त से हो यह नहीं होना चाहिए।

❖ **अखिल बंसल :** आजकल पड़गाहन की विधि पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है कहते हैं जहां अच्छी रसीद दान की कटेगी वहीं आहार होगा ?

आचार्यश्री : विधि की चर्चा तो आगम ग्रंथ में भी है। आचार्य शांतिसागरजी की विधि सींग पर गुड़ से आप सब विदित ही हैं। विधि तो व्रत परिसंख्यान है। इच्छा का निषेध है। अनेक साधु तो थाली के क्रम की विधि लेते हैं भोजन किस क्रम से रखा है।

❖ **अखिल बंसल :** युवा वर्ग पर कैसे धर्म का प्रभाव हो ?

आचार्यश्री : कोलकाता प्रवास के समय प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से युवाओं को प्रभावित होते देख अनेक मुनिसंघ युवाओं के लिए शिविर लगाते हैं।

❖ **कपूरचन्द पाटनी :** आचार्यश्री ! सिद्धशिला के आकार के संबंध में आपका क्या विचार है ?

आचार्यश्री : चन्द्राकार शिला ही सिद्धशिला का आकार है छतरी के समान नहीं।

❖ **पाटनीजी :** सिद्ध भगवान की प्रतिमा के संबंध में ?

आचार्यश्री : केश नहीं होंगे। अष्ट प्रातिहार्य आदि नहीं होंगे। मंगल द्रव्य नहीं होंगे। सिद्ध मूर्ति का ध्यान रखना चाहिए।

❖ **डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन :** षट्खण्डागम को गृहस्थों को पढ़ना चाहिए या नहीं ? (डॉ. प्रेमीजी ने कहा कि महाराज वह तो कोर्स में भी आ गया है)।

आचार्यश्री : उल्लेख मिलता है कि जब आचार्य नेमिचंदजी षट्खण्डागम पढ़ रहे थे और चामुण्डराय उनसे मिलने पहुंचे तो नेमिचंदजी ने ग्रंथ बंद कर दिया था। अनेक विद्वानों ने उसका अध्ययन किया। योग्यता व पात्रता का ध्यान तो रखना ही पड़ेगा। पं. जवाहरलाल, पं. रतनचंद मुख्तार आदि ने शंका समाधान के लिए अध्ययन किया। पं. फूलचन्दजी ने भी कहा कि सैद्धान्तिक विषय है। अध्ययन के लिए शुद्धि आदि तो आवश्यक है। धवला की 9वीं पुस्तक में शुद्धि का वर्णन है। आचार्यश्री ने कहा कि आज समयसार जैसे ग्रंथ की अवज्ञा हो रही है। कोई गद्दी पर बैठकर पढ़ रहा है तो कोई बगल में दबाकर चल रहा है। इन सब ग्रंथों को पात्रता एवं शुद्धता का ध्यान रखकर ही पढ़ना चाहिए।

❖ **डॉ. ज्योति जैन :** आज की ज्वलंत समस्या पर प्रश्न करते हुए आचार्यश्री ! कन्या भ्रूण हत्या समाज के लिए नासूर बन गई है। समाज का समीकरण बिगड़ रहा न तो कोई कानून सफल हो रहा है और न नियम। सरकार समाज सब बेबस से नजर आ रहे हैं।

आचार्यश्री : जब तक भोगों की सीमा पर विराम नहीं लगेगा संयम को नहीं अपनाया जाएगा। पाप का भय नहीं रहेगा तब तक समस्या जस की तस बनी रहेगी। संयम संस्कार के द्वारा ही हम विराम लगा सकते हैं।

अध्यक्ष बगड़ाजी ने कहा कि आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद मंगल उद्बोधन और मंगल सान्निध्य हम पत्रकारों व पत्र सम्पादक संघ को मिला। देश के विभिन्न जगहों से पत्रकार आए। आचार्यश्री से चर्चा हुई। व्यवस्था में यदि कमी रही हो तो उसे नजरअंदाज कर देना।

आभार व्यक्त करते हुए डॉ. सत्यप्रकाश जैन ने अध्यक्ष बगड़ाजी, बिहार बंगाल तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी अजीत पाटनी को धन्यवाद दिया। क्षेत्र के दर्शन का लाभ सभी ने उठाया। चातुर्मास स्थापना में अपनी अनुमोदना की। गुरुपूर्णिमा और वीर शासन जयन्ती मनाई गई। पूज्य आचार्यश्री के सत्संग का लाभ मिला। इसीतरह हमें अपने गुरुओं का मार्गदर्शन मिलता रहें इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

सदस्य सूची — राजस्थान

ABJPS/ RJ /S-1
श्री अखिल बंसल
सम्पादक –समन्वय वाणी (पा.)
129, जादोन नगर 'बी'
स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर – 18
मो. : 09929655786
E- samanvayvani@indiatimes.com

ABJPS/ RJ /L-13
श्री अकलेश जैन
सम्पादक : अजमेर हलचल (पा.)
341/10, सुन्दर विलास, अजमेर (राज.)
मो. : 09251888550
E-mail : ajmeraajkal@yahoo.co.in

ABJPS/ RJ /L-7
प्रो. माणकचन्द जैन
सम्पा.–धर्म रत्नाकर समाचार पत्र (मा.)
256, लक्ष्मी विला
माछला मगरा स्कीम, उदयपुर (राज.)
मो. : 09413474677

ABJPS/ RJ /S-4
श्री महेन्द्रकुमार पाटनी
डी–127, सावित्री पथ
बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015
मो. : 09829499222

ABJPS/ RJ /S-3
श्री मिलापचन्द डण्डिया, पत्रकार
सी–5, चिकित्सालय मार्ग
बापूनगर, जयपुर (राज.)
मो. : 09414041879

ABJPS/ RJ /L-2
श्री नरेन्द्रकुमार जैन
सम्पादक – स्वतंत्र जैन चिन्तन (मा.)
ए–65, वर्द्धमान हाउस
नाका मदार, अजमेर (राज.) 305007
मो. : 09414004270
E- swatantrachintan@yahoo.co.in

ABJPS/ RJ /L-49
श्री निर्मलकुमार गोधा
सम्पादक: विशद ज्ञान ज्योति (त्रै.)
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
नेहरू बाजार, जयपुर (राज.)
मो. : 09414812008

ABJPS/ RJ /L-
श्री प्रवीणचन्दजी छाबड़ा
26ए, सूर्यनगर, तारों की कूंट
टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

ABJPS/ RJ /L-63
श्री राकेशजी गोधा
सम्पा. – पिंकसिटी सोशल न्यूज (पा.)
781, गोधो का चौक, हल्दियों का रास्ता
जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
मो. : 09828560931
E- pinkcitysocialnewsjpr@yahoo.co.in

ABJPS/ RJ /S-15
डॉ. रमेशचन्द जैन
मु.पो. निवाई, जिला टोंक (राज.)
मो. : 09414238469

ABJPS/ RJ /L-25
श्री रमेश जैन तिजारिया
सम्पादक – संचार दूत (सा.)
एफ–32, घिया मार्ग बनीपार्क
जयपुर (राज.) 302016
मो. : 09314088200
E- sanchardoot2011@gmail.com

ABJPS/ RJ /L-50
श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल
ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
मो. : 09887700007

ABJPS/ RJ /L-54
डॉ. संजीव भानावत
सी–235 ए, दयानन्द मार्ग
तिलकनगर, जयपुर (राज.)
मो. : 09414073466
E- bhanawat.sanjeev@gmail.com

मध्यप्रदेश

ABJPS/ MP /L-70
श्री अभय बाकलीवाल
सम्पादक – पुष्पगिरि तीर्थ (मा.)
1818, सुदामानगर, डी सेक्टर
इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09425049289

ABJPS/ MP /L-8
श्री जयकुमारजी गोधा
सम्पादक : श्री जैन हलचल (मा.)
30 बजरिया, मैन रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09827010360

ABJPS/MP /L-46
ब्र. जिनेश मलैया
सम्पादक – संस्कार सागर (मा.)
दि. जैन पंच बालयती मंदिर
ए–बी रोड़, विद्यासागर नगर
इन्दौर (म.प्र.)
फोन : (0731) 2571851
E- sanskarsagar@rediffmail.com

ABJPS/ MP /L-6
डॉ. महेन्द्रकुमार 'मनुज'
मानद सम्पादक – अक्षय ज्योति
22/2, रामगंज जिन्सी, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09826091247
E- mkjainmanuj@yahoo.com

ABJPS/ MP /L-52
श्री नरेन्द्र भारती
ए–27, न्यू नर्मदा विहार
सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.)
मो. : 09926055754

ABJPS/ MP /L-65
श्री प्रमोद बण्डी
सम्पादक – हूमड़ संस्कार (मा.)
405, रौनक आर्च
21/4, रेसकोर्स रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09423547851

ABJPS/ MP /L-53
श्री पवन जैन
16 जवाहर मार्ग, सनावद (म.प्र.)
मो. : 09424006647

ABJPS/ MP /L-20
श्री राकेश जैन'सोनी' पत्रकार
सम्पादक – देवपुरी वंदना (मा.)
214, व्यंकटेश नगर
एरोड्रम रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09826649494
E-mail : devpurivandana@yahoo.in

ABJPS/ MP /L-68
श्री आर. के. जैन
सम्पादक – संस्कार प्रचार (मा.)
89लोकनायक नगर
एयरपोर्ट रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09425074522

ABJPS/ MP /L-51
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर'
सह सम्पादक – सिद्धान्त कुंभ
सोलंकी कॉलोनी, सनावद
जिला खरगोन (म.प्र.)
मो. : 09826299568

ABJPS/ MR /S-12
डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल
प्रधान सम्पादक – समन्वय वाणी
बी–369, ओ.पी.एम. कॉलोनी
मु.पो. अमलाई, जि. शहडोल (म.प्र.)
मो. : 09752965331

ABJPS/ MP /L-14
श्री रवीन्द्र मालव
प्रेम शान्ति भवन, फालके बाजार
लश्कर–ग्वालियर (म.प्र.) 474001
मो. : 09303378787

मध्यप्रदेश

ABJPS/ MP /L-5
श्री सुभाषचन्द गंगवाल
सम्पादक – मानतुंग पुष्प (सा.)
174, एम.टी. क्लॉथ मार्केट, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09827244641
E- subhashgangwal@gmail.com

ABJPS/ MP/L-22
डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
सम्पादक – पार्श्व ज्योति (मा.)
एल–65, न्यू इन्दिरा नगर
बुरहानपुर (म.प्र.) 450331
मो. : 09826565737
E- surendrabharti003@yahoo.co.in

ABJPS/ MP /L-62
श्रीमती सुमन जैन
सम्पादक – ऋषभ देशना (मा.)
37, कंचन बाग, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09993066222

ABJPS/ MP /L-69
डॉ. संगीता विनायका
सम्पादिका – परिणय प्रतीक (मा.)
69 नयनश्री अपार्टमेंट
मालगंज चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09827248979

ABJPS/ MP /L-56
पं. सुरेशचन्द मारौरा
जीवन सदन, सर्किट हाउस के पास
शिवपुरी (म.प्र.)
फोन : (07492) 233632

ABJPS/ MP /L-72
पं. वर्द्धमान कुमार सोंरया
सम्पादक – वीतराग वाणी (मा.)
सैल सागर चौराहा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. : (07683) 242592

दिल्ली

ABJPS/ D /L-39
श्री अंकित जैन 'प्रिंस'
सम्पादक – पुलक वाणी (मा.)
4/2771, गली नं. 3, विहारी कॉलोनी
शाहदरा, दिल्ली –110032
मो. : 09810900699
E- ankitprince2001@yahoo.com

ABJPS/ D /L-47
पं. मुकेश जैन 'विमल'
4141 आर्यपुर, सब्जी मण्डी
दिल्ली – 110007
मो. : 09212019103

ABJPS/ D /L-24
श्री ओ.के. जैन
सम्पादक – उड़ती खबर (पा.)
टी–2419, दूसरी माला
गुरुनानक मार्केट, 12 नाईवाला के सामने,
करोल बाग, नई दिल्ली
मो. : 09911071107

ABJPS/ D /L-74
डॉ. सत्यप्रकाश जैन
बी–173, सूरजमल विहार
दिल्ली – 110092
मो. : 09910460066

ABJPS/ D /L-81
श्री स्वराज जैन
1/5533 बलवीर नगर एक्सटेंशन
स्ट्रीट नं. 16, शाहदरा, दिल्ली – 110032
मो. : 09899614433

प. बंगाल

ABJPS/ WB /L-71
श्री अजीत पाटनी
सम्पादक – वर्द्धमान संदेश
पी–17, कलाकार स्ट्रीट
कोलकाता– 700007
मो. : 09339756995
E- vardmansandesh@gmail.com

ABJPS/ WB /L-73
श्री दिनेशकुमार जैन
सम्पादक – जैन जनवाणी
29/1 आरमेरियन स्ट्रीट
कोलकाता – 700001
मो. : 09831164297
E-mail : dineshdhagra@hotmail.com

ABJPS/ WB /L-48
डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा
सम्पादक – दिशाबोध (मा.)
46, स्ट्राण्ड रोड़, तीसरा तला
कोलकाता–700007
मो. : 09331030556
E-mail : clbagra@gmail.com

आसाम

ABJPS/ A /L-9
श्री कपूरचन्दजी पाटनी
सम्पादक : जैन गजट
केदार रोड़, जैन गली
गोहाटी (आसाम) 781001
मो. 09864118950
E-mail : kcjain39@gmail.com

कर्नाटक

ABJPS/ KR /L-59
श्री शान्तिनाथ के होत पेटे
सम्पादक – जिनेन्द्र वाणी (मा.)
6 बमापूर गली
हुबली कर्नाटक – 580028
मो. : 09980897979

गुजरात

ABJPS/ G /L-17
डॉ. शेखरचन्द जैन
सम्पादक : तीर्थंकर वाणी (मा.)
25, शिरोमणि बंगलोज
बड़ौदा एक्सप्रेस हाइवे के सामने
सी.टी.एम. चार रास्ते के पास
अहमदाबाद (गुज.) 380026
मो. (079) 26301263
E-mail : drspjain@yahoo.com

ABJPS/ G /L-31
ब्र. शान्ताबैन जैन
सम्पादिका – निर्मल ध्यान ज्योति (मा.)
निर्मल ध्यान केन्द्र
गिरनार तलहटी, जूनागढ़ (गुज.)
मो. : 09426968440

ABJPS/ GL /L-64
श्री शैलेष कापड़िया
सम्पादक – जैनमित्र (सा.)
खपाटिया चकला
गांधी चौक, सूरत (गुज.)
मो. : 09374724727
E-mail : jainvijay@world gatein.com

हरियाणा

ABJPS/ HR /L-38
डॉ. नीलम जैन
सम्पादक – जैन महिलादर्श (मा.)
273/1, आदर्शनगर
न्यू रेलवे रोड़, गुड़गाव (हरियाणा)
मो. 09810809727

ABJPS/ HR /L-41
श्री ताराचन्दजी प्रेमी
मु.पो. फिरोजपुर झिरका (हरियाणा)

उत्तर प्रदेश

ABJPS/ UP /L-33
श्री अनूपचन्द जैन एडवोकेट
234/1, जैन कटरा, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
मो. : 09412721720
E-mail : anupchandjain@rediffmail.com

ABJPS/ UP /L-77
डॉ. फूलचन्दजी 'प्रेमी'
बी 23/45, पी–6, शारदा कॉलोनी
खोजवां, वाराणसी (उ.प्र.)

ABJPS/ UP /L-26
डॉ. ज्योति जैन
सह सम्पादक – जैन संदेश (पा.)
सर्वोदय जैन मण्डी, खतौली (उ.प्र.)
मो. : 09412889449

ABJPS/ UP /L-66
श्री जगदीशप्रसाद जैन
सम्पादक – जैसवाल जैन दर्पण (मा.)
डी–33, कमलानगर, आगरा (उ.प्र.)
मो. : 09359909721

ABJPS/ UP /L-80
डॉ. जयकुमार जैन
सम्पादक – अनेकान्त (त्रै.)
429, पटेल नगर, नई मण्डी
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
मो. : 09760002389
E-mail : virsewa@gmail.com

ABJPS/ UP /L-78
डॉ. कपूरचन्द जैन
सवोदय जैन मण्डी, खतौली (उ.प्र.)
मो. : 09756937500

ABJPS/ UP /L-79
श्री मनोजकुमार जैन 'निर्लिप्त
सम्पादक : पावन पथ प्रदर्शक
पीडब्ल्यूडी क्वार्टर नं. 52
समद रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मो. : 09457110108
E-mail : nirlipt.mkjain@gmail.com

ABJPS/ UP /L-16
श्री नवनीत जैन
सम्पादक : सम्मेदाचल (पा.)
3 न्यू देवपुरी, निकट अनुराग सिनेमा
बागपत रोड़, मेरठ (उ.प्र.)
मो. : 09358400016
E-mail : sammedachal@yahoo.com

ABJPS/ UP /L-58
श्री प्रकाशचन्द जैन
1/344, सुहागनगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
मो. : 09927417410

ABJPS/ UP /L-32
श्री प्रवीण जैन
सम्पादक – अरिहंत शिक्षा टाइम्स (मा.)
बी–63, बलराम नगर, लोनी
गाजियाबाद (उ.प्र.)
मो. : 09811227718
E-mail : praveenjain1958@rediffmail.com

ABJPS/ UP /L-55
पं. सुनील जैन 'संचय'
सम्पादक – गोलापूर्व जैन (त्रै.)
सुधा ट्रेडर्स, देवगढ़ रोड़, ललितपुर (उ.प्र.)
मो. : 09793821108

ABJPS/ UP/L-67
श्री सुमतकुमार जैन लुहाड़िया
सम्पा. दि. जैन महासमिति पत्रिका (पा.)
माणिक मूर्ति कुंज, कमला बाजार
सासनी – 204216
जिला – महामायानगर (उ.प्र.)
मो. : 09412526522
E-: chiefeditor@djmahasamiti.org

ABJPS/ UP /L-10
डॉ. विमला जैन 'विमल'
सह सम्पादिका – जैन महिलादर्श
1/344,सुहागनगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
मो. : 09927417410

महाराष्ट्र

ABJPS/ MR /L-44
श्री भरत इन्दरचन्द पापड़ीवाल
सम्पादकं – अक्षय ज्योति (मा.)
3–9–4, पानदरीबा रोड़
औरंगाबाद (महा.)
मो. : 09371141104
E- sanmati28@yahoo.com

ABJPS/ MR /L-76
प्रो. डॉ. भागचन्द भास्कर
सम्पादक – प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार
कस्तूरबा वाचनालय के पास
तुकाराम चाल, सदर, नागपुर (महा.)
मो. : 09421363926

ABJPS/ MR /L-30
प्रा. लीलावती जैन
सम्पादिका – धर्म मंगल (मा.)
1 सलिल अपार्टमेंट
प्लाट नं. 57, सानेवाडी
औंध, पुणे (महा.) 411007
फोन : (020) 25887793

ABJPS/ MR /L-60
श्री विजयकुमार जैन
सम्पादक – जिनागम (मा.)
बी–217, हिन्द सौराष्ट्र
इण्डस्ट्रियल एरटेट मारोल
अंधेरी (पूर्व) मुम्बई
मो. : 09322307908

ABJPS/ MR /L-29
श्री विराग शास्त्री
सम्पादक – चहकती चेतना (त्रै.)
महासंघ बंगला नं. 50, बेलतगांव रास्ता,
लामरोड़ मु. पो. देवलाली
जिला नासिक (महा.)
मो. : 09373294684
E- chehaktichetana@yahoo.com

उत्तरप्रदेश

ABJPS/ UP /L-75
डॉ. राजीव प्रचण्डिया
सम्पादक – जयकल्याण श्री
394, मंगलकलश, सर्वोदय नगर
आगरा रोड़, अलीगढ़, (उ.प्र.)
मो. : 07417967266
E- jaikalyanshree@gmail.com

त्रैवार्षिक

ABJPS/ MP /T-40
श्री मनीष जैन
इतवारी वार्ड , सागर (म.प्र.)
मो. : 09300730427

ABJPS/ MP /T-61
श्री श्रीपाल जैन 'दिवा'
सम्पादक – भाव विज्ञान (त्रै.)
शाकाहार सदन, एल–75
केशन कुंज, हर्षवर्धन नगर
भोपाल (म.प्र.)
मो. : 09893930333

ABJPS/ UP /T-11
श्री सरमनलाल दिवाकर
दिवाकर सदन, निकट जैन मंदिर
आदर्श नगर, सरधना (उ.प्र.)
मो. : 09411027998

दिवंगत सदस्य

ABJPS/ MP /L-35
श्री माणिकचन्दजी पाटनी, इन्दौर (म.प्र.)

ABJPS/ UP/Y-36
श्री सुरेशचन्दजी बारोलिया, आगरा (उ.प्र.)

ABJPS/ UP /Y-42
श्री रमाकान्त जैन, लखनऊ (उ.प्र.)

ABJPS/ MR /L-57
श्री देवीलाल जैन, मुम्बई (महा.)

वार्षिक

ABJPS/ MP /Y-18
डॉ. अनुपम जैन
सम्पादक – अर्हत् वचन (त्रै.)
ज्ञानछाया, डी–14, सुदामा नगर
इन्दौर (म.प्र.) 452009
मो. : 09425053822
E- anupamjain3@rediffmail.com

ABJPS/ MP /Y-27
डॉ. हरिश्चन्द जैन
सह सम्पादक – संस्कार भारती
गोपाल दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय
मौरेना (म.प्र.)
मो. : 09425123167

ABJPS/ MP /Y-45
पं. जयसेन जैन
सम्पादक – सन्मति वाणी (मा.)
201, अमित अपार्टमेंट
1/1, पारसी मोहल्ला
छवनी, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09826488588

ABJPS/ MP /Y-28
श्री निहालचन्दजीजैन
सम्पा. – घर घर चर्चा रहे धर्म की (मा.)
जवाहर बार्ड, बीना (म.प्र.)
मो. : 09425671632

ABJPS/ RJ /Y-21
डॉ. प्रेमचद रांवका
22श्रीजी नगर, दुर्गापुरा
जयपुर (राज.) 302018
मो. : 09412545570

ABJPS/ D /Y-23
श्री राजेन्द्रकुमार जैन
सम्पादक – जैन संजोग (मा.)
7035, गली टंकी वाली
पहाड़ी धीरज, दिल्ली – 110006
मो. : 09899844515

ABJPS/ MP /Y-19
श्री रमेश कासलीवाल
सम्पादक – वीर निकलंक (मा.)
303, अमित अपार्टमेंट
1/1 पारसी मोहल्ला, इन्दौर (म.प्र.)
मो. : 09425905735

ABJPS/RJ /Y-43
श्रीमती शैल बंसल
सम्पादिका – समन्वय वाणी
स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
मो. : 9314498942

ABJPS/ RJ /Y-34
डॉ. ताराचन्द बख्शी
सम्पादक – अहिंसा वाणी
बख्शी भवन, न्यू कॉलोनी
पांच बत्ती, जयपुर (राज.)
फोन :(0141) 3296721

ABJPS/ MP /Y-37
श्री तुलाराम जैन
सह सम्पादक – स्वतंत्र जैन चिन्तन
किला रोड़, अम्बाह – 478111
जिला मुरैना (म.प्र.)
मो. : 09827856504

ABJPS/ UP /Y-
डॉ. विजयकुमार जैन
सम्पादक – श्रुत संवर्धनी (मा.)
3/65, विकास खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ (उ.प्र.)
मो. : 09415789449

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ

129, जादोन नगर 'बी', स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
फोन : (0141) 2722274 मो. 07737241003, 09929655786

सदस्यता आवेदन पत्र

दो फोटों संलग्न करें।

पूरा नाम .....

पिता/पति का नाम .....

जन्म दिनांक ..... शिक्षा.....ब्लड ग्रुप .....

पति/पत्नि का नाम .....

जन्म दिनांक ..... शिक्षा .....ब्लड ग्रुप.....

विवाह तारीख ..... निवास का पता .....

.....

समाचार पत्र का नाम.....ई मेल .....

प्रकाशित प्रतियां .....प्रकाशन अवधि .....

फोन नं०.....मोवा नं० .....

आर.एन.आई. क्रं .....पोस्टल रजिस्ट्रेशन क्रं.....

डीएवीपी विज्ञापन दर.....विभिन्न धार्मिक/सामाजिक

ट्रस्ट या संस्था की सदस्यता एवं पद की जानकारी .....

.....अन्य व्यवसाय यदि कोई

हो तो.....

यदि किसी अन्य पत्रकार संघ के सदस्य हों तो जानकारी.....

.....पुत्र/पुत्रियों की जानकारी

.....

1.

2.

3.

सदस्यता आवेदन पत्र के साथ आजीवन (1100/–) सदस्यता शुल्क रुपए .....

.....नगदी/चेक/ड्राफ्ट क्रमांक..... .....

....बैंक.....दिनांक .....का तथा हमारा पासपोर्ट साईज (2 प्रति) चित्र संलग्न है।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष
डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा
का सम्मान

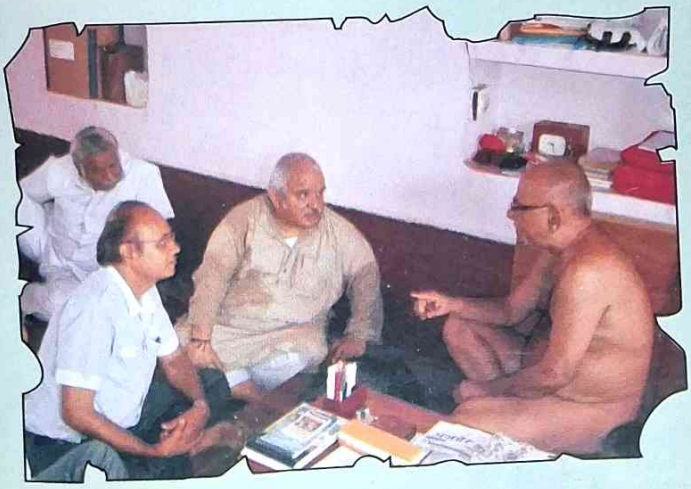

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी
के साथ चर्चा करते हुए
अखिल बंसल व डॉ. सत्यप्रकाश जैन

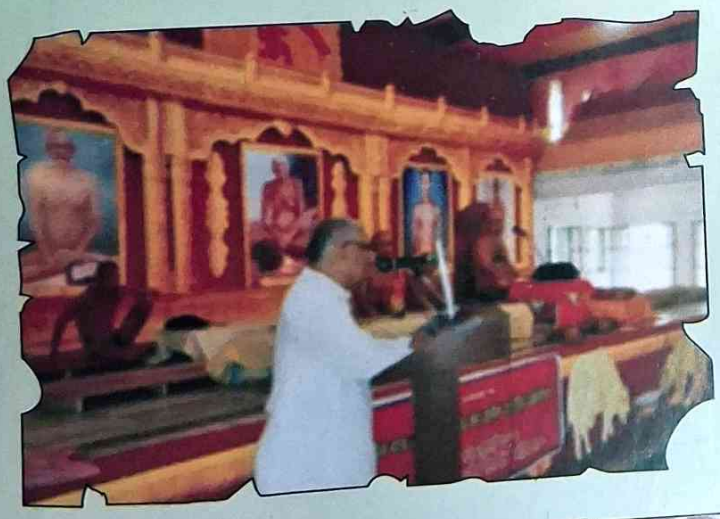

डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा का
अध्यक्षीय उद्‌बोधन

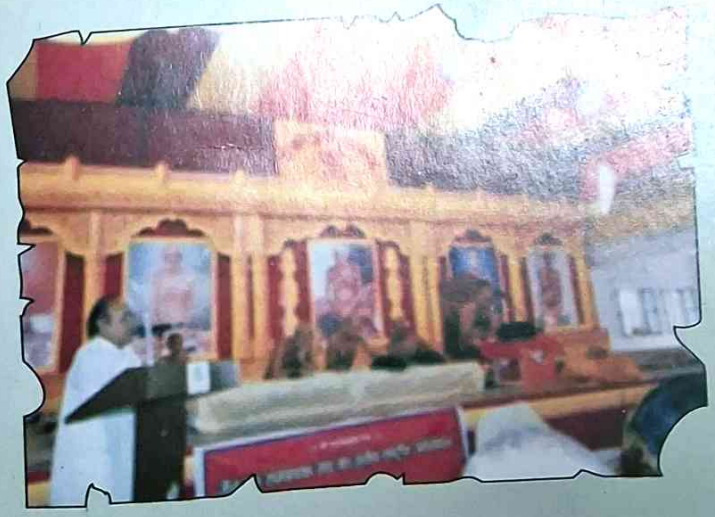

रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए
महामंत्री श्री अखिल बंसल

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण समारोह

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी का उद्‌बोधन सुनते हुए पत्रकार गण

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी के साथ पत्रकार गण

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ, जयपुर के लिए संपादक अखिल बंसल द्वारा प्रिन्टोमैटिक्स, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।